www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 05 फरवरी 2017 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 05 फरवरी 2017 से 11 फरवरी 2017

माघ शु. – 09 ● वि० सं०–2073 ● वर्ष 58, अंक 61, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 192 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,117 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए.वी. अशोक विहार (फेज़-4) ने मनाया रजत जयन्ती समारोह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, अशोक विहार फेज़ – 4 में विद्यालय की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में रजत जयंती समारोह 'युगांतर' का भव्य आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी पधारे।

मुख्य अतिथि श्री पूनम सूरी जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का शुभांरभ किया। स्कूल के चेयरमैन डा. ओबरॉय, वाइस चेयरमैन श्रीमती शशिप्रभा चाँदला तथा प्रधानाचार्य श्रीमती कुसुम भारद्वाज ने सभी अतिथियों का अभिनंदन किया। स्कूल के संगीत विभाग के शिक्षकों तथा छात्रों ने मनमोहक वाद्यवृंद प्रस्तुति दी तथा विद्यालय के छात्रों ने मनोहारी स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया।

स्कूल के चेयरमैन डॉ. ओबरॉय ने अपने संबोधन में विद्यालय की स्थापना से लेकर अब तक के सफर को याद करते हुए विद्यालय के विकास पर प्रकाश डाला और इस सफलता का श्रेय श्रीमती कुसुम भारद्वाज को दिया, जिनकी लगन और अथक प्रयासों के कारण ही आज विद्यालय की गिनती क्षेत्र के प्रतिष्ठित विद्यालयों में की जाती है।

प्रधानाचार्या श्रीमती कुसुम भारद्वाज ने विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें उन्होंनें आए हुए अतिथियों को शिक्षा, खेल एवं सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में विद्यालय की उल्लेखनीय उपलब्धियों तथा सफलताओं से अवगत कराया। उन्होंने उल्लेख किया कि न केवल शिक्षा के क्षेत्र मे विद्यालय का परिणाम शत प्रतिशत है बल्कि खेलों में भी विद्यालय के छात्रों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है और मैडल जीते हैं। सामाजिक कार्यों में रक्तदान शिविर आयोजन भी किया गया।।

विद्यालय के छात्रों ने इस अवसर पर एक मनोहारी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसकी रंगारंग नृत्य प्रस्तुतियों ने सभी अतिथियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती मीनू शर्मा के कुशल निर्देशन में नृत्य नाटिका 'युगान्तर' का भव्य मंचन किया गया। इसके पश्चात् छात्रों की योग तथा स्किपिंग (रस्सा कूद) पर आधारित प्रस्तुति ने सभी को जोश एवं उत्साह से भर दिया। भारी संख्या में उपस्थित अभिभावकों ने इस कार्यक्रम का भरपूर आनन्द उठाया।

श्री पूनम सूरी जी ने देश का पहला पेपरलैस डिजिटल लैब स्कूल बनने पर विद्यालय को बधाई दी एवं विद्यालय के स्टॉफ तथा शिक्षकों को शुभकामनाएँ देते हुए विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय के चहुँमुखी विकास के लिए उन्होंने विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती कुसुम भारद्वाज की भी भूरि–भूरि प्रशंसा की। श्री पूनम सूरी, ने होनहार छात्रों को पुरस्कार वितरित किए। जिनमें बोर्ड में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राएँ तथा खेलों में राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विद्यालय का नाम रोशन करने वाले छात्र सम्मिलित थे।

इस अवसर पर डॉ. एन. के. ओबरॉय, डायरेक्टर डॉ. निशा पेशिन, सचिव श्री रविंद्र कुमार, कोषाध्यक्ष श्री महेश चोपड़ा, के अतिरिक्त अनेक शिक्षा विद्, प्राचार्य, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शूटर, निगम पार्षद एवं विद्यालय के पूर्व छात्र उपस्थित थे। विद्यालय के मनमोहक बैंड ने सुरीली धुनों से अतिथियों की अगवानी की।

प्रधानाचार्या श्रीमती कुसुम भारद्वाज ने सभी गणमान्य अतिथियों एवं अभिभावकों का समारोह में शामिल होने के लिए धन्यवाद किया। राष्ट्रगान से समारोह का समापन हुआ।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 05 फरवरी 2017 से 11 फरवरी 2017

वाणी के सलिल में स्नान

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

ऋतेन गुप्त ऋतुभिश्च सर्वैः, भूतेन गुप्तो भव्येन चाहम्।
मा मा प्रापत् पाप्मा मौत मृत्युः, अन्तर्दधेऽहं सलिलेन वाचः।।

अथर्व 17.1.28

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **आदित्यः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(अहं)** मैं **(ऋतेन)** सत्य से **(च)** और **(सर्वैः)** सब **(ऋतुभिः)** ऋतुओं से **(गुप्तः)** रक्षितज **[होऊँ]**, **(भूतेन)** अतीत से **(भव्येन च)** और भविष्यत् से **(गुप्तः)** रक्षित **[होऊँ]**। **(पाप्मा)** पाप **(मा)** मुझे **(मा)** मत **(प्रापत्)** प्राप्त हो, **(मा उत) न ही (मृत्युः)** मृत्यु **[प्राप्त हो]**। **(अहं)** मैं **(वाचः)** वेदवाणी के **(सलिलेन)** सलिल से, ज्ञानामृत से **(अन्तः दधे)** [स्वंय को] आच्छादित कर देता हूँ।

● मैं अ–सुरक्षा के सन्त्रास से व्याप्त इस जगत् में सर्वात्मना रक्षित रहना चाहता हूँ। पर रक्षा का उपाय क्या है? सहस्त्रों सैनिकों को अपने चारों ओर सन्नद्व करके भी मैं वैसी रक्षा प्राप्त नहीं कर सकता, जैसी स्वयं नैतिक नियमों में बंधकर तथा आत्म–बल को जगाकर पा सकता हूँ। सर्वप्रथम मैं 'सत्य' से रक्षित होऊँ। मनुष्य बहुधा अपनी रक्षा के लिए 'असत्य' का अवलम्बन करता है। वह सोचता है कि असत्य कहकर मैं अपराध के दण्ड से बच जाऊँगा। पर असत्य छिपता नहीं। अपराधी को अपराध का दण्ड तो मिलता ही है, असत्य–भाषण का अतिरिक्त दण्ड भोगना पड़ता है। इसके विपरीत सत्य बोलकर अपना अपराध स्वीकार कर लेने पर वह क्षमा का पात्र हो जाता है। मैं ऋतुओं से भी रक्षित होऊँ। ग्रीष्म, बर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर, वसन्त, छहों ऋतुएँ व्यवस्थित रूप से आकर प्रकृति के कार्य–कलाप का चारुता के साथ निर्वाह करती हैं। इन ऋतुओं से शिक्षा लेकर मैं भी अपने कार्य को यथासमय करने की आदत डालूँ, तो मैं भी रक्षित रह सकता हूँ। यदि मैं अपने राष्ट्र के उज्ज्वल अतीत से शिक्षा लेकर वर्तमान को उज्ज्वल करने का व्रत लूँ, तो अतीत भी मेरा रक्षक बन सकता है। उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करके उसे मूर्तरूप देने के प्रयास द्वारा 'भव्य' को भी मैं अपना रक्षक बना सकता हूँ।

पाप मुझे न प्राप्त हों। यदि मैं दृढ़ता धारण लूँ कि किसी भी अवस्था में पाप के वशीभूत नहीं होऊँगा, तो पाप सदा मुझसे दूर रहेगा। परिणामतः नैतिक दृष्टि से मैं सुरक्षित रहूँगा। मृत्यु भी मुझे न प्राप्त हो। यों तो जिसने जन्म लिया है वह मृत्यु से ग्रस्त होता ही है, किन्तु जब भी चाहे अकाल मृत्यु आकर हमें ग्रस ले तो हम सर्वथा असुरक्षित रहते हैं। अतः सुरक्षा के लिए अकाल मृत्यु से बचना आवश्यक है। अन्त में आत्मरक्षार्थ में वाणी के सलिल से, वेदवाणी के ज्ञानामृत से, स्वयं को अच्छादित करता हूँ। जैसे शीतल–पवित्र जल का पान और उसमें स्नान श्रम और सन्ताप को मिटाकर हमारी रक्षा करता है, वैसे ही वेदवाणी के पवित्र ज्ञान–सलिल में स्नान भी हमारे अज्ञान–मूलक दुःख–द्वन्द को हरकर हमारा रक्षक बनता है। अतः मैं वेदवाणी के निर्मल ज्ञान–सरोवर में डूबकी लगाता हूँ और सब भीतियों से रहित, सब अविद्याओं से मुक्त तथा सब कर्त्तव्य–बोधों से स्फूर्ति पाकर पूर्ण सुरक्षित हो जाता हूँ। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

आनन्द गायत्री कथा

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पिछले अंक में चर्चा हो रही थी कि मानव–शरीर से अधिक श्रेष्ठ कोई शरीर नहीं। हमारे ग्रन्थों ने इसे देवपुरी, ऋषिपुरी, ब्रह्मपुरी कहा है। संसार में प्रत्येक वस्तु उत्पन्न होती है, बढ़ती है, समाप्त हो जाती है। धर्म वह है जिससे लोक–परलोक दोनों का सुधार हो जाता है। यज्ञ से लोक सुधरता है और परलोक भी सुधरता है। योग की ध्यानावस्था में सुख तब होता है जब आकाशी संसार (द्युलोक) और मृत्युलोक तथा माननीय शरीर वाले संसार तीनों में सामञ्जस्य हो। मनुष्य यदि सुखी रहना चाहता है तो उसे यज्ञ करना होगा। यज्ञ से तीनों संसारों में आकाश, पृथ्वी और शरीर में सामञ्जस्य होता है। यज्ञ से समय पर वृष्टि होती है, पृथिवी उपजाऊ बनती है, अन्न शक्तिशाली होता है।

—अब आगे

किन्तु हमारे देश में दासता के कारण एक विचित्र प्रकार की हीन भावना–सी उत्पन्न हो गई है। हमारे ग्रन्थों ने जब कहा कि मनुष्य अपनी इच्छा से वर्षा कर सकता है, तो हमारे देश के लोगों ने माना नहीं। यूरोप और अमेरिकावाले किसी बात को जब तक प्रमाणित न करें, तब तक हम लोग अपने ग्रन्थ में लिखी किसी बात को स्वीकार करने को तत्पर नहीं। वर्षा के सम्बन्ध में भी हमें सन्देह था कि वह मनुष्य की इच्छा से नहीं हो सकती। किन्तु आज से कुछ वर्ष पूर्व अमेरिका के एक वैज्ञानिक ने जब घोषणा की कि उसने अपनी इच्छा से वर्षा कराने का यन्त्र तैयार कर लिया है तब हमने स्वीकार किया कि हाँ, मनुष्य की इच्छा से भी वर्षा हो सकती है। मैंने इस यन्त्र के चित्र को देखा तो विस्मय में पड़ गया। यह यन्त्र आपके हवन–कुण्ड के अतिरिक्त और कुछ नहीं। अत्यन्त विशाल हवनकुण्ड–सा है वह, जिसमें लगभग वही जड़ी–बूटियाँ जलाई जाती हैं, जिन्हें हम सामग्री के रूप में हवन यज्ञ में आहुतियाँ देते हैं जिनसे धुआँ उठकर आकाश में जाता है तो आकाश में मेघ एकत्रित होने लगते हैं। तब वायुयान उन मेघों के ऊपर जाकर शुष्क हिम डालते हैं। मेघ शीतल हो जाते हैं और वर्षा होने लगती है। अमेरिका की इस वर्षा–विधि में और हमारे देश भारत की वर्षा–विधि में यदि कोई अन्तर है तो यह कि हम मेघों को वर्षा के रूप में परिवर्तित करने के निमित्त वायुयान और शुष्क हिम का प्रयोग नहीं करते। हम उस मन्त्र का आश्रय ग्रहण करते हैं जिससे बादल, स्वयं ही वर्षा करने लगते हैं।

सो मेरे भाई! यह है यज्ञ से लाभ, और उसे न करने से हानि है वह जिसे हम देखते हैं। कभी वर्षा उपयुक्त अवसर पर नहीं होती; कभी होती है तो इतनी अधिक कि बाढ़ का विकराल रूप धारण कर लेती हैं। लहलहाते क्षेत्र विनष्ट हो जाते हैं घरों का विध्वंस हो जाता है। अन्न में वह शक्ति नहीं जो पूर्वकाल में थी। औषधियों में रोग–निवारण की शक्ति नहीं। वायु में अमृत नहीं।

वेद भगवान् ने कहा था– 'यज्ञ से वह सुबुद्धि प्राप्त होती है जो मनुष्य का स्वास्थ्य, बल, धन, राज्य, परिवार, सम्मान, अवस्था और कीर्ति से सुसम्पन्न कर देती है।' प्रायः सुबुद्धि अथवा सुमति का अर्थ ज्ञान या बुद्धि होता है। आधुनिक तत्त्व–वेत्ता और विज्ञानवेत्ता बुद्धि से आगे नहीं जा सकते। बुद्धि को वे आत्मिक शक्ति समझते हैं, आत्मा का तत्त्व समझते हैं। उन्हें ज्ञात नहीं कि बुद्धि आत्मा का नहीं, प्रत्युत इस शरीर का और प्रकृति का अंश है। प्रकृति का सर्वप्रथम रूप जो प्रकृति के बिगड़ने के उपरान्त निर्मित हुआ, बुद्धि था। भगवान् ने जब सृष्टि की रचना की, तब प्रकृति सोई हुई थी। उसमें केवल एक गुण था– वह थी बुद्धि। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। भगवान् ने अपनी शक्ति से जागृत किया। आज्ञा दी– "उठो, जागो! मुझे तुमसे सृष्टि का निर्माण कराना है।" तब भगवान् की शक्ति से प्रकृति में महत्तत्व, जिसे समष्टि बुद्धि या सामूहिक बुद्धि भी कहते हैं, पैदा हुई। यही प्रत्येक मानवीय शरीर में बुद्धि बनकर प्रकट होती है। बुद्धि का अर्थ सुमति से नहीं। सुमति या सुबुद्धि भगवान् की वह शक्ति है जो यज्ञ के द्वारा मनुष्य को प्राप्त होती है, जिसे प्राप्त करने के पश्चात् यह जीता–जागता आत्मा प्रकृति से उस परमानन्द की ओर अग्रसर होने लगता है जो इसका लक्ष्य तथा ध्येय है।

'यजुर्वेद' के द्वितीय अध्याय में एक मन्त्र आता है। महर्षि दयानन्द ने इसका जो अर्थ किया वह आपको सुनाता हूँ। अर्थ है– "कौन यज्ञ करने वाला इस यज्ञ को त्यागता है? अर्थात् कोई नहीं त्यागता।" जो समझता है और जानता है, वह यज्ञ

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

www.thearyasamaj.org

अंग्रेज़ी शासन की भारत को देन

● डॉ. रघुवीर वेदालंकार

8–14 जनवरी के 'आर्यजगत' में उपर्युक्त शीर्षक से पंचकूला के श्रीकृष्ण चन्द गर्ग का लेख अंग्रेज़ी राज्य की प्रशंसा तथा देन के विषय में छपा है। पता नहीं पंचकूला तथा चण्डीगढ़ के आर्यों के उर्वरक मस्तिष्क में ऐसे नये–नये विचार कहाँ से आते रहते हैं। कुछ वर्ष पूर्व चण्ड़ीगढ के किसी डॉ. उप्पल जी ने यज्ञ में देशी घी के स्थान पर वनस्पति घी के प्रयोग की वकालत प्रादेशिक सभा में की थी। श्री रामनाथ जी सहगल ने उनकी मान्यता मेरे पास उत्तर के लिए भेजी थी। वनस्पति घी के विरोध में मेरे द्वारा अनेक तर्क देने पर भी वे अपनी बात पर अडिग रहे।

मैं आर्यसमाज सै. 9 पंचकूला में उत्सव तथा अन्य कार्यक्रमों में जाता रहता हूँ। कृष्ण चन्द्र जी विचारक व्यक्ति हैं। इसलिए उनके लेख के विषय में मुझे कुछ लिखना पड़ रहा है।

गर्ग जी ने लेख में अधिकतर अंग्रेज़ी राज्य की तुलना मुस्लिम राज्य से करके अंग्रेज़ी राज्य को अच्छा ठहराया है। मुस्लिम राज्य तो बुरा था ही। बुरे से क्या तुलना करनी? अंग्रेज़ी राज्य के गुण–दोष स्वतंत्र रूप में देखने चाहिए। यह ठीक है कि अंग्रेजों ने रेल, डाक आदि की कुछ अच्छी सुविधाएँ दीं। ये सुविधाएं उनके शासन के लिए अनिवार्य थीं। आप लिखते हैं अंग्रेजों ने सारे देश में सड़कों का नहरों का ड़ाकघरों का जाल बिछाया। शायद गर्ग जी ने ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा नहीं किया जहाँ 1960 तक भी लगभग 5–10 मील तक सड़क तथा डाकघर नहीं थे। हमने ऐसा भारत देखा है। आप कहते हैं उन्होंने स्वतंत्र न्यायपालिका दी। क्या आपको उनके इस न्याय का पता नहीं कि जिसमें क्रान्तिकारियों को, देशभक्तों को झूठ–मूठ मुकदमों में फँसा कर फाँसी दे दी जाती थी। महर्षि दयानन्द ने अंग्रेज़ी न्यायपालिका की आलोचना यह कह कर की है कि यदि कोई गोरा किसी काले (भारतीय) को मार दे तो उसे कोई बहाना बनाकर छोड़ दिया जाता है। गर्ग जी के अनुसार अंग्रेजों ने हमें बढ़िया शिक्षा व्यवस्था की तथा उनकी एक बड़ी देन है– अंग्रेज़ी भाषा। हाँ, सचमुच अंग्रेज़ी भाषा। हाँ, सचमुच अंग्रेजों ने हमें ये दोनों ऐसी देन दी हैं जिन्होंने भारत को अब तक भी मानसिक, भाषिक तथा शैक्षिक रूप से गुलाम बना रखा है पता नहीं कब तक भारत इस गुलामी को ढोता रहेगा। यही गुलामी है कि रूस में राजदूत के रूप में अपना परिचय अंग्रेज़ी में देने पर श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित को लताड़ पड़ती है कि क्या भारत की अपनी कोई भाषा नहीं है? वह अंग्रेज़ी परिचय पत्र वहां स्वीकार नहीं किया गया था। क्या आपको भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का यह वाक्य स्मरण नहीं निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल। आपके अनुसार अंग्रेज़ी पढ़कर ही भारत ने अपने विज्ञान आदि के क्षेत्र में प्रगति की है। क्या हिन्दी ऐसी घटिया भाषा है कि उसमें कुछ सोचा ही नहीं जा सकता। अंग्रेज़ी परस्त लोगों के मस्तिष्क अंग्रेज़ीमय हो गए हैं। अतः वे अंग्रेज़ी में ही सोचते, बोलते, लिखते तथा न्याय करते हैं वे हिन्दी का महत्व क्या जानें। स्मरण रहे विचार मन–मस्तिष्क से उत्पन्न होते हैं, भाषा केवल उनकी अभिव्यक्ति का साधन मात्र है। किसी भी भाषा में गहन चिन्तन, लेखन, सृजन किया जा सकता है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के स्नातकों ने विज्ञान की ऐसी मौलिक पुस्तकें हिन्दी में लिखी थी जिन्हें देखकर वि.वि. अनुदान आयोग के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. कोठारी भी दंग रह गये थे। आप संस्कृत वालों को अंग्रेज़ी के बिना कूपमण्डूक कहते हैं। दयानंद भी ऐसा ही कूपमण्डूक था जिसने कूप से बाहर निकल कर दुनियाँ को हिला दिया। हमारे प्राचीन ऋषि–मुनि भी ऐसे ही कूपमण्डूक थे कि पाणिनि के व्याकरण का लोहा सारे देश मान रहे हैं। आर्य यास्क के छोटे से ग्रंथ निरुक्त के आगे विदेशी संस्कृतज्ञों का भी सिर झुकता है। योग–न्याय आदि छह दर्शनों के समकक्ष दर्शन ग्रन्थ क्या अंग्रेज़ी साहित्य में हैं। गणित में लीलावती, चिकित्सा में चरक, सुश्रुत जैसे ग्रन्थ इन्हीं कूपमण्डूक संस्कृतज्ञों की रचनाएँ हैं। इसी प्रकार खगोल विद्या में वराह मिहिर सुप्रसिद्ध हैं। रुस और चीन आदि कई देशों ने अपनी भाषा के माध्यम से ही विज्ञान आदि सभी क्षेत्रों में उन्नति की है। क्या भारत ऐसा नहीं कर सकता था। अंग्रेज़ी ने भारतीयों का चिन्तन ही कुण्ठित कर दिया कि वे अब हिंदी या अन्य प्रान्तीय भाषाओं में सोच–विचार भी नहीं कर सकते। बाजारों में बोर्ड, घरों पर नामपट्ट, निमन्त्रण पत्र आदि सभी कुछ तो अंग्रेज़ीमय हो गया। क्या यहाँ प्रान्तीय भाषाओं तथा हिंदी से काम नहीं चल सकता? नहीं, क्योंकि भारतीय जनमानस अंग्रेज़ी शिक्षा का गुलाम हो गया। यह अंग्रेजों की देन है। यही शिक्षा का हाल है। इसी अंग्रेज़ी शिक्षा के कारण हम पूरे अंग्रेज बन गये तथा अपनी पुरातन भारतीय संस्कृति को भूल कर अंग्रेजों के सुर में सुर मिलाकर कहने लगे कि भारत में आर्य बाहर से आए। वेदों का रचनाकाल 3000 ई. पूर्व तक है। वेदों में चरवाहों जैसे प्रेमगीत, अनर्गल बातें तथा राजाओं आदि का इतिहास भरा पड़ा है। एक प्रकार से वेद अधम कोटि की रचना है। रामायण और महाभारत केवल काल्पनिक काव्य (मिथ) हैं। राम कभी हुए ही नहीं। यह सब अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रभाव है कि पुरातन मान्यताओं की हंसी उड़ाई जाती है। ब्रह्मचर्य को दकियानूसी बकवास कहकर स्वच्छन्द भोग की वकालत की जाती है। विवाह परम्परा को ध्वस्त करके 'लिव इन रिलेशन' के नाम पर युवक–युवतियाँ उन्मुक्त जीवन व्यतीत करते हैं। अंग्रेज़ी नववर्ष तथा वेलेण्टाइन डे पर रात में करोड़ों की शराब गटक कर उन्मुक्त जश्न मनाते हैं, जबकि भारतीय नववर्ष, विक्रमसंवत्सर इन्हें स्मरण नहीं आता। वृद्ध माता–पिता को बेसहारा हरिद्वार आदि छोड़ देते हैं या वृद्धाश्रमों में उन्हें शरण मिलती है। यह सब अंग्रेज़ी शिक्षा की देन है। मैकाले ने स्वयं कहा था कि इस शिक्षा को प्राप्त करके बंगाल में कोई भी हिन्दू अपने धर्म पर गर्व करने वाला नहीं बचेगा। आप कहते हैं कि उसने मूर्तिपूजक कहा था, वैदिक धर्म नहीं। वैदिक धर्म तो वहाँ था ही नहीं, जिसमें नाम का वह यत्न करता। उसका यत्न हिन्दू धर्म के रूप में प्रचलित धर्म के नाम का ही था। इसके साथ ही क्या आपने मैक्समूलर के इस पत्र को नहीं पढ़ा जो उसने अपनी पत्नी के नाम लिखा था जिसमें वह कहता है कि उसका वेदभाष्य भारतीयों के धर्म को उसके मूल–वेद सहित उखाड़ने का सर्वोत्तम उपाय है। भारत में मैकाले की शिक्षा का उद्देश्य भारतीयों को ईसाई धर्म में दीक्षित करना था, यह तथ्य सुविदित है। स्वयं पादती क्रिफोर्ड ने ऐसा स्वीकार किया है (Chris Hanitdy in a Changing India P-147)। आप उसी शिक्षा प्रणाली के गुण गा रहे है।

गर्ग जी के अनुसार अंग्रेजों ने हमें अत्याचारी मुस्लिम शासन से छुटकारा दिलाया। क्या ही अजीब तर्क है। क्या अंग्रेज मुसलमानों से कम अत्याचारी तथा क्रूर थे? क्या आपको जलियांवाला बाग याद नहीं जहाँ क्रूर हत्यारे डायर ने कहा था कि मेरे पास गोलियाँ समाप्त हो गयी थीं, अन्यथा अधिक लोगों को मारता। आपने मु. नगर जिले में वे पत्थर के बड़े–बड़े कोल्हू नहीं देखे, जिनमें मनुष्य को गन्ने की भाँति पिलवा दिया जाता था। क्रान्तिकारियों पर किये गए अमानुषिक अत्याचार, कालेपानी की यातनाएँ क्या आपको याद नहीं। इन्हीं जालिम अंग्रेजों ने भारतीयों को तोप के आगे बाँध कर उड़ा दिया तथा वृक्षों पर लटका कर फाँसी दी। आपकी दृष्टि में फिर भी ये क्रूर नहीं है। दयानन्द की हत्या भी इनका ही षड़यंत्र थी।

गर्ग जी के अनुसार अंग्रेजों ने सभी भारतीय किसानों को एक केन्द्रीय शासन के नीचे लाकर भारत को एकता के सूत्र में पिरोया। आपकी यह नयी खोज है। यदि अंग्रेजों ने ऐसा कर दिया था तो स्वतंत्रता के पश्चात् सरदार पटेल को सभी रिसायतों का केन्द्रीकरण तथा हैदराबाद पर बल प्रयोग क्यों करना पड़ा? अंग्रेजों की तो नीति ही थी फूट डालो राज करो। किसी न किसी बहाने से वे रिसायतों को हड़पते गए। जहाँ असफल हुए, वहाँ युद्ध किया। यह उनका प्रयास अपने राज्य के विस्तार का था। भारत के केन्द्रीकरण का नहीं। ऐसा तो अकबर ने भी किया था, किन्तु महाराणा प्रताप ने उससे लोहा लिया तो महारानी लक्ष्मी बाई का बलिदान आप क्यों भूल गए।

अंग्रेजों ने भारत में जो लूट मचाई, उस पर आपका ध्यान नहीं गया। प्रत्येक बड़ा अधिकारी, वायसराय आदि यहाँ से सोना–चांदी–हीरे–जवाहरात जहाजों में भर कर इग्लैंड ले जाता था, ऐसा इतिहास सुस्पष्ट है। किसानों की यह दशा थी कि खेत में जितना बीज बो देते थे, पानी के अभाव में वह भी वापस नहीं मिलता था। किसान नँगे बदन आधी धोती पहन कर खेती करके भी कंगाल ही रहते थे, हमने ऐसे किसान देखे हैं। हमारे कुशल कारीगरों के हाथ इन जालिमों में कटवा दिये थे जिससे भारत में उत्तम उत्पादन न हो सके। ये धूर्त भारत से कच्चा माल इग्लैंड ले जाकर वहाँ उससे निर्मित माल को वापस भारत में कई गुना मुनाफे से बेचते थे। महादेवी वर्मा ने लिखा है कि इस प्रकार भारत को रुपये के 64 पैसे में से केवल 2 पै. मिलते थे। 62 पै. यह अंग्रेज डकार जाता था। अंग्रेजों के जाते समय भारत पर कर्ज इसलिए नहीं था कि नवभारत में अकूत सम्पदा थी।

गर्ग जी ने स्वामी दयानन्द जी को भी लपेट लिया कि उन्होंने अंग्रेज़ी शासन की प्रशंसा की है। यदि ऐसा है तो स्वामी जी अंग्रेज़ी शासन से छुटकारे के लिए बैचेन क्यों थे। क्योंकि वे माता–पिता के समान सुखकर विदेशी राज्य से भी स्वराज्य को उत्तम बतलाते है तथा जगह जगह लिखते हैं कि हमारे देश में विदेशी राजा न हो। अंग्रेजों की अच्छाइयों को बतलाकर स्वामी जी ने भारतीयों को लताड़ा है। यथा– इन लोगों ने गर्म देश भारत में आकर भी अपनी वेशभूषा नहीं छोड़ी जबकि भारतीयों ने इनकी नकल करके अपनी वेशभूषा भी छोड़ दी। आपने पं. गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द आदि का उदाहरण दिया कि ये चारों अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त स्वामी जी के अनुयायी बने। क्या इनसे अतिरिक्त भारतवासी आपको स्वामी जी के अनुयायी नहीं दीख पड़े? ये चारों भी अंग्रेज़ी के कारण उनके अनुयायी नहीं बने थे, अपितु महर्षि की विद्वत्ता आदि गुणों के कारण उनके शिष्य बने थे। अंग्रेजों ने भारत में फूट का बीज बोया। आर्य तथा द्रविड जातियों की काल्पनिक सत्ता बतलाकर

शेष पृष्ठ 06 पर ☞

www.thearyasamaj.org

हम सूक्ष्म बुद्धि से प्रभु दर्शन करें

● डा. अशोक आर्य

प्रभु दर्शन के लिए बुद्धि का सूक्ष्म होना आवश्यक है, जो शरीर में सोम की रक्षा करने से बनती है। यही प्रभु की सच्ची प्रार्थना है। वह प्रभु ही वरणीय वस्तुओं के ईशान है तथा हमारे वह प्रभु ही पालन करने वालों में सब से उत्तम पालक हैं। इस बात का ही वर्णन यह मन्त्र इस प्रकार कर रहा है:–

पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम्।
इन्द्रं सोमे सचा सुते।। ऋग्वेद 1.5.2।।

इस मन्त्र में चार बातों पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

1. प्रभु हमारा पालक है

जब हम प्रभु को मित्र मानकर सब मित्रवत एकत्र होकर प्रभु के समीप जाते हैं, उसका गायन करते हैं, उस की उपासना करते हुए हम उपासक कहते हैं कि वह प्रभु पालकों में सब से अधिक श्रेष्ठ पालक है। हम जानते हैं कि माता–पिता अपने बच्चे का पालन करते हैं, इस कारण वह पालक कहलाते हैं। व्यवसाय में कार्यरत कर्मचारियों का पालक होता है उस व्यवसाय का मलिक, इसलिए उसके कर्मचारी तथा उसका परिवार उसे पालक मानते हैं। इस प्रकार ही हमारा वह परमात्मा भी हमारा पालक होता है क्योंकि उसने न केवल हमें इस संसार में पैदा ही किया है बल्कि हमें अनेक प्रकार के सुगन्धित फूल, खाने के लिए भरपूर फल, सब्जियाँ व वनस्पतियाँ दी हैं तो पहनने के लिए उत्तम वस्त्र भी दिए हैं। इस प्रकार वह परमात्मा भी हमारा बड़े उत्तम प्रकार से पालन कर रहा है। वह भी हमारा पालक है। वह प्रभु ही हमारे सब प्रकार के शल्यों, दोषों व, शत्रुओं का नाश करता है, उनके भय से हमें बचाता है। इसलिए हम उस प्रभु का गायन करते हैं। उसकी कीर्ति का , या यों कहें कि उसकी विशेषताओं का, उसके उपहारों का स्मरण करते हुए उसके यश का हम गायन करते हैं, स्मरण करते हैं।

2. प्रभु प्रदत्त शक्ति से पुरुषार्थ

हमारे सब शत्रुओं का प्रभु नाश कर देते है। जब प्रभु की कृपा से हमारे सब शत्रु कमजोर हो जाते हैं, उनकी शक्ति क्षीण हो जाती है। सोम द्वारा उत्पन्न की गई शक्ति से वह मारे जाते हैं तो प्रभु से प्राप्त इस शक्ति से हम पुरुषार्थ करते हैं, मेहनत करते हैं, यत्न करते हैं, प्रयास करते हैं तथा अनेक प्रकार के धनों को पाने में हम सफल हो जाते हैं। इस प्रकार वह प्रभु न केवल हमारे शत्रुओं की शक्ति को ही नष्ट करता है बल्कि हमें अनेक

3. धन ऐश्वर्यों के स्वामी प्रभु का गुणगान

वह प्रभु वरण करने के , धारण करने के योग्य है। वह प्रभु ही सब प्रकार के धनों का स्वामी है। जगत में वह प्रभु सर्वाधिक धनवान है। उसकी प्रतिस्पर्धा में कोई अन्य धनवान नहीं है। जिसके पास जो भी धन है, वह सब प्रभु का ही दिया हुआ है। ऐसे परम ऐश्वर्य वाले प्रभु, ऐसे शत्रुओं का नाश करने वाले उस प्रभु का हम कीर्तन करते हैं, उसे स्मरण करते हुए उसके गुणों को अपने गीतों में सँजो कर गाते हैं। एसे प्रभु के यश व कीर्ति हमारे भजनों का, हमारे गीतों का अंग होते हैं, केन्द्र होते हैं, जिन्हें हम गाते हुए अत्यन्त खुशी अनुभव करते हैं।

4. प्रभु दर्शनार्थ सोम धारण

उस प्रभु का स्तवन, उस प्रभु के गुणों का गायन हम तभी कर पाते हैं, जब हमने विपुल मात्रा में सोम का पान किया होता है। यह सोम भी न केवल प्रभु से मेल होने पर ही होता है अपितु प्रभु पाने का साधन भी है। हम पहले भी बता चुके हैं कि सोम शक्ति का स्रोत होता है। जिसके शरीर में शक्ति होती है वह ही किसी काम में दिल लगा कर परिश्रम करता है। प्रभु स्तवन, प्रभु के गुणों का गायन भी वही कर सकता है, जिसने सोम को अपने शरीर में धारण किया है। अतः उस प्रभु से मेल के लिए शरीर का सशक्त होना आवश्यक है तथा शरीर को शक्तिशाली करने के लिए शरीर में सोम की विपुलता का होना भी आवश्यक है।

इस प्रकार मन्त्र यह उपदेश कर रहा है कि हम सोम का अपने शरीर में सम्पादन करने वाले, निर्माण करने वाले बनें। सोम का निर्माण कर हम सोम की रक्षा के उपायों को भी जानें तथा इस बनाये गए, पैदा किए गए सोम को शरीर में सँभालने का भी उपाय हम करें। जब यह सोम हमारे शरीर में सुरक्षित हो जाता है तब यह सोम ही हमारा उस पिता से मेल कराने वाला, उस पिता के पास ले जाने वाला बनता है। इस प्रकार अपने शरीर में सोम को पैदा करना, उसकी रक्षा करना जब हो जाता है तो हमारे शरीर में सोम ही विपुल भण्डार हो जाते हैं, तब यह सोम ही हमें प्रभु की ओर ले जाता है। यह सोम के हमारा उस पिता से मेल कराता है। इस प्रकार जब हम सोम को पैदा कर उसे सँभालते हैं तो यही वास्तव में सच्चे अर्थों में प्रभु का सच्चा स्तवन है, सच्ची प्रार्थना है, सच्चा कीर्तन है, सच्चा गायन है। हमारे शरीर के इस सोम से जब हम उस महान प्रभु रुपी सोम को प्राप्त करते हैं तो यही जीवन की सब से महान सफलता मानी जाती है, यही सब से बडी सफलता होती है।

104 शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी 2
गजियाबाद (उ.प्र.) भारत
चलभाष 09718528068

वसु बनो

● नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

संसार का उपकार करने के मुख्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वसुओं की श्रेणी में आने वाले विद्वानों को समस्त मानव समाज को उन्नति के पथ पर लेकर चलने का गुरुतर कार्य करना चाहिए। संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य देव दयानन्द ने बताया है। साथ ही सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझने का संदेश दिया है। समाज को निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रखने का दायित्व वसुओं की श्रेणी में आने वाले विद्वानों से अपेक्षित है।

अब पहला प्रश्न उठता है कि वसु कौन होते है ? साधारण शब्दों में वसु अर्थात् निवास स्थान। धरती माता हम सभी प्राणियों के लिए वसु है जिसके आश्रय में हम रहते हैं। अब इस यौगिक अर्थ को समझें तो जिन विद्वानों के आश्रय में अर्थात दिखाए सही श्रेष्ठ मार्ग पर लोग चलते हैं वे मनुष्यों के लिए वसु की श्रेणी में आते हैं। परंतु क्या मनुष्य समाज का नेतृत्व करना, उन सभी को एक साथ एक उन्नति के मार्ग पर ले चलना, क्या इतना सरल कार्य है। इसके लिए विद्वानों को किन बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ेगा यह जानना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसके लिए ऋग्वेद का मंत्र स्पष्ट संदेश देता है।

पाकत्रा स्थन देवा हृत्सु जानीथ मर्त्यम्। उप द्वयुं चाद्वयुं च वसवः।। ऋग्.8.18.15

अर्थात हे वसु देव विद्वानो ! आपके लिए अपेक्षित है कि आप पाकत्रा अर्थात् परिपक्व व ज्ञान वाले बनो और मरणधर्मा मनुष्यों की प्रकृति को अपने अन्तःकरण में सही सही पाहचानों और नीर क्षीर विवेकी बनकर सही और गलत, सत्य और असत्य को यथावत् पहचान कर सबको एक साथ प्रगति के पथ पर लेकर चलें।

समाज का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति के लिए परिपक्व ज्ञान वाला होना आवश्यक है यानि यदि विद्वान समाज का नेतृत्व करना चाहता है तो उसे सभी अलग–अलग वृत्तियों वाले मनुष्यों उनकी समस्याओं और समस्याओं के समाधान का सम्यक ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। क्रान्तदर्शी देव दयानन्द महान समाज सुधारक बनकर सम्पूर्ण विश्व के उत्थान के लिए ईश्वरीय वेदज्ञान का मार्ग प्रशस्त करने से पूर्व संपूर्ण समाज, उसकी समस्याओं, विषमताओं, कुरीतिया, पाखंडों, का पूरा यथावत् समयक परिपक्व ज्ञान प्राप्त किया तभी उनका समाधान वेद ज्ञान के आधार पर दिया। इसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द ने दलितोद्धार का बीड़ा उठाने से पूर्व दलितों की सामाजिक स्थिति, उनकी समस्याओं और समाज में फैले जातिवाद के विष को समझा और फिर इस परिपक्व ज्ञान को पाकर ही समाधान प्रस्तुत करते हुए दलितोद्धार सभा की स्थापना करके उसका नेतृत्व किया। अर्थात् समाज का नेतृत्व करने वाले विद्वानों को समाज की स्थिति का संपूर्ण ज्ञान, समस्याओं का आकलन और समाधान लेकर ही प्रयास करना पड़ेगा। समाज को उन्नति के पथ पर ले जाने के लिए विद्वानों द्वारा नेतृत्व देने की स्थिति को घर के मुखिया द्वारा पूरे परिवार को एकजुट रखकर सबका कल्याण करने की कोशिशों से बड़ी आसानी से समझा जा सकता है। घर के मुखिया को घर के सभी सदस्यों की मनोभावनाओं अन्तर्विरोधों को उनके आपसी संबंधों के आलोक में समझ कर एकजुट रखने का प्रयास करके निर्णय लेने होते हैं। सास–बहू, पति–पत्नी, पुत्र–पुत्री, पिता–पुत्र, पुत्री सभी संबंधों की गरिमा और उनके आपसी वैमनस्य का ध्यान हर फैसले का आधार बनता है। यदि इसका सम्यक् परिपक्व ज्ञान मुखिया को नहीं होगा तो परिवार बिखर सकता है। ऐसे में समाज का नेतृत्व करने वाले विद्वान् वसु नेता की स्थिति कपास उगाने वाले किसान सरीखी नहीं अपितु सूत कातने वाले व्यक्ति जैसी होती है, जो भिन्न–भिन्न स्थानों सभ्यताओं की मानव प्रवृत्ति रुपी रुईयों को मिलाकर एक ऐसा सूत कातने का यत्न करता है, जिससे उन्नति प्रगति के कल्याण रुपी वस्त्र का निर्माण हो सके। अर्थात् नेता विद्वान् अलग अलग प्रवृत्तियों योग्यताओं के लोगों को साथ लेकर कल्याण मार्ग के पथ राष्ट्र का निर्माण करने के लिए अग्रसर हो सकें। यहाँ विद्वानों को कुटिल और सरल मनुष्यों, झूठ और सत्य का यथावत् ज्ञान होना भी अत्यंत आवश्यक है। विद्वानों को स्वयं और समाज को दोहरे चरित्र वाले कपटी स्वार्थी चापलूस किस्म के लोगों से बचाना अत्यंत आवश्यक है। ऐसे कपटी चापलूस अपने स्वार्थ के लिए समाज का पतन करवा देते हैं।

602 जी एच 53
सैक्टर 20, पंचकूला
मो. 09467608686, 9878748899

www.thearyasamaj.org

(अमर कथाकार और उपन्यास सम्राट् मुंशी प्रेमचन्द की लिखी यह कथा मूलतः उर्दू में लिखी गई थी और उर्दू के प्रसिद्ध साप्ताहिक 'प्रकाश' (लाहौर) में 1929 ई. में प्रकाशित हुई थी। इस पत्र के सम्पादक उर्दू पत्रकारिता के पितामह प्रसिद्ध आर्यनेता महाशय कृष्ण जी थे। इस कहानी के प्रारम्भ से ही ऋषि दयानन्द के पावन चरित्र का प्रभाव परिलक्षित होने लगता है। इसका हिन्दी अनुवाद प्रख्यात आर्यविद्वान् प्रो. राजेन्द्र जी जिज्ञासु ने किया है और इसे उन्होंने 2003 ई. में प्रकाशित भी करा दिया है। उर्दू में इस कहानी का शीर्षक था– 'आपकी तस्वीर'। श्री जिज्ञासु जी के प्रति आभार सहित यह कहानी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है– सम्पादक)

आपका चित्र!

● **मुंशी प्रेमचन्द**

(1) लोग मुझसे कहते हैं तुम भी मूर्तिपूजक हो। तुम ने भी तो स्वामी दयानन्द का चित्र अपने कमरे में लटका रखा है। माना कि तुम उसे जल नहीं चढ़ाते हो। इसको भोग नहीं लगाते। घण्टा नहीं बजाते। उसे स्नान नहीं कराते। उसका शृंगार नहीं करते। उसका स्वांग नहीं बनाते। उसको नमन तो करते ही हो। उसकी (ऋषि दयानन्द की) विचारधारा को तो सिर झुकाते हो, मानते ही हो। (मूल में शब्द हैं, "सरे तस्लीम तो झुकाते ही हो।" हम ने इसका भावार्थ लेकर यथार्थ अनुवाद किया है। 'जिज्ञासु') कभी–कभी माला व फूलों से भी उसका सम्मान करते हो। यह पूजा नहीं तो और क्या है?

उत्तर देता हूँ कि श्रीमन् इस आदर (ताज़ीम) व पूजा में अन्तर है। बहुत बड़ा अन्तर है। मैं उसे अपने कक्ष में इसलिए नहीं लटकाए हुए हूँ कि उसके दर्शन से मुझे मोक्ष की प्राप्ति होगी। मैं आवागमन के चक्कर से छूट जाऊंगा। उसके दर्शन मात्र से मेरे सारे पाप धुल जायेंगे अथवा मैं उसे प्रसन्न करके अपना अभियोग (Case) जीत जाऊँगा अथवा शत्रु पर विजय प्राप्त कर लूँगा किंवा और किसी ढँग से मेरा धार्मिक अथवा सांसारिक प्रयोजन सिद्ध हो सकेगा। मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च व पवित्र आचरण सदा मेरे नयनों के सम्मुख रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएँ अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट वेला में उस पवित्र मोहिनी मूरत के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो। दृढ़ता धीरज बने रहें। क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं कई बार।

(2) बहुत दिनों की बात है मैं एक बड़ी रियासत में एक विश्वस्त कर्मचारी था। अपने स्वभावानुसार अजात शत्रु, शान्तिप्रिय, स्टेट की धड़ेबन्दियों से दूर, न इधर न उधर, अपने काम से काम। राजभवन में आए दिन नित्य नई शरारतें होती रहती थीं। नए नए तमाशे होते रहते थे। नए नए षड्यन्त्र रचे जाते थे। मेरा किसी भी गुट से कोई लेना–देना नहीं था। सम्भवतः इसी कारण राजा साहेब की मुझ पर कृपा दृष्टि रहती थी। राजा साहेब बनूर स्वाभिमानी, स्वेच्छापूर्वक निर्णय लेकर चलने वाले और कुछ सीमा तक स्वपोषण वाले शासक थे। रैज़ीडैन्ट (अंग्रेजों के शासनकाल में प्रत्येक राजा व नवाब को अपने राज्य में अंग्रेज सरकार का एक प्रतिनिधि रखना पड़ता था। उसे रैज़ीडैन्ट कहा जाता था। 'जिज्ञासु') (Resident) की चाटुकारिता करना उनके बस की बात नहीं थी। जिन पत्र–पत्रिकाओं से दूसरी रियासतें शंकित थीं और अपनी सीमाओं में उनका प्रवेश निषिद्ध घोषित कर रखा था, वे सब हमारी स्टेट में आते थे। किसी प्रकार की रोक–टोक नहीं थी। (निज़ाम हैदराबाद के राज्य में मराठी दैनिक केसरी व आर्यसमाज के प्रायः सब पत्रों का प्रवेश निषिद्ध था। 'जिज्ञासु')

एक दो बार रैज़ीडैन्ट ने ऐसी प्रेरणा अवश्य की थी परन्तु, राजा साहेब ने इसको कतई महत्त्व न दिया। अपने आन्तरिक प्रबंध में किसी दूसरे का हस्तक्षेप वह अच्छा नहीं मानते थे। इस कारण रैज़ीडेन्ट भी उनसे अप्रसन्न था।

परन्तु इसका यह अर्थ तो नहीं कि राजा महोदय दूरदर्शी, मितव्ययी, कुशल प्रशासक व जागरूक व्यक्ति थे। ऐसी बात तो नहीं थी। वह अत्यन्त विलासी सौन्दर्य प्रेमी प्रत्युत कामुक व्यक्ति थे। रनवास में दर्जनों ही रानियाँ थीं तथापि आए दिन नई नई चिड़िया आती रहती थी। इस विभाग में कतई मितव्यता अथवा कंजूसी का प्रश्न ही नहीं उठता था। रूपरंग की, सौन्दर्य की पूजा उनकी प्रकृति का अभिन्न अंग था। इसके लिए वह लोक–परलोक, धर्म व दुनिया सब कुछ वार देने को उद्यत रहते थे। वह स्वेच्छापूर्वक रहना चाहते थे और क्योंकि यूरोपियन प्रशासक उन्हें सीमा के भीतर रखना चाहते थे, वह उन्हें चिढ़ाने के लिए ऐसी बातों में असाधारण रीति से धन लुटाते रहते थे। इसमें उन्हें प्रजा के सहयोग व समर्थन का पूरा विश्वास (मूल शब्द हैं 'रियायत व हमायत'। 'जिज्ञासु') प्राप्त था।

इधर कुछ दिनों से एक पंजाबी महिला रनवास में प्रविष्ट हुई थी। उसके विषय में कई प्रकार की चर्चाएँ सुनने को मिल रही थीं। कोई कहता था बाज़ारी वेश्या है, कोई अभिनेत्री बतलाता था, कोई भले घर की लड़की बताता था। रूप की दृष्टि से वह अद्वितीय नहीं कही जा सकती थी परन्तु, राजा साहेब जी–जान से उस पर लट्टू थे। प्रशासनिक कार्य में तो वैसे ही उन्हें रूचि नहीं थी। परन्तु, अब तो वह सर्वथा प्रेम में डूब चुके थे। (मूल शब्द हैं 'फ़ना फ़ि–उलइशक'। 'जिज्ञासु।) उसके लिए एक पृथक महल निर्मित होने लगा। प्रतिदिन नए नए उपहार आते रहते। उसे सजाने के लिए यूरोप से चित्र और बर्तन मँगवाए गए थे। उसे नृत्य व संगीत सिखाने के लिए इटली, फ्रांस, व जर्मनी से शिक्षक बुलाए गए थे। सारी रियासत में उसी का शासन (मूल शब्द हैं 'दौर दौरा'। 'जिज्ञासु') था। लोगों को अचम्भा सा होता था कि आख़िर इस स्त्री में ऐसा कौन सा गुण है जिसके कारण राजा साहेब ने सुध–बुध ही बिसरा दी है।

एक दिन मैं रात को भोजन करके अभी लेटा ही था कि राजा साहेब ने याद फ़रमाया। आश्चर्य हुआ कि परम्परा के विपरीत इस समय क्यों बुलवाया है? मैं राजा साहेब के विशेष विश्वस्त लोगों में से नहीं था। इस कारण से कुछ डर भी लगा कि कहीं कोई बला तो नहीं आने वाली है। रिसायतों में ऐसे अवसर भी तो कम नहीं होते। सम्भव है किसी अशुभचिन्तक ने मेरी शिकायत कर दी हो। एकदम तैयार हुआ और अनिच्छा से काँपते–हाँपते हुए राजा साहेब की सेवा में उपस्थित हुआ। प्रथम दृष्टि में ही मेरी सब चिन्ताएँ मिट गईं। राजा साहेब के चेहरे पर क्रोध से हताशा, निराशा व शोक छाया हुआ था। नयनों में एक विनती सी थी। मुझे देखते ही कुर्सी पर बैठने का संकेत किया और बोले, "क्यों जी सरदार साहेब! आपने कभी प्रेम किया है? किसी के नेह में स्वयं को विसराया है?" मैंने औपचारिकता रहित यह बातचीत सुनी तो समझ गया कि इस समय शिष्टाचार व आदर की आवश्यकता नहीं। राजा साहेब किसी निजी समस्या में निःसंकोच मेरा परामर्श चाहते हैं। कहा, "महाराज! ऐसा अवसर तो कभी आया ही नहीं।"

राजा साहेब ने मेरी ओर पानदान बढ़ाते हुए कहा, "सचमुच तुम बड़े भाग्यशाली हो। अच्छा हुआ कि तुम इस जाल में नहीं फँसे। यह तो बड़ा सुन्दर लुभावना स्वर्णिम जाल है। यह बहुत मीठा परन्तु जानलेवा विष है। यह मनमोहक परन्तु नयनों को जलाने वाला, तड़पाने वाला दृश्य है। यह वह मधुर गीत है जो मनुष्य को सदा के लिए नरक के दारुण दुःख में डाल देता है।"

उन्होंने सुरा से गिलास भरा और एक घूँट पीकर बोले, "जानते हो मैंने इस सरफ़राज़ के लिए कितना अपयश व अपमान सहा है। मैं उसके एक ही भ्रूविलास पर अपना यह सीस काटकर उसके पैरों में रख सकता था। इन्हीं हाथों से मैंने उसका पलँग बिछाया है। उसे हुक्का भर भर कर पिलाया है। उसके कमरे में झाड़ू भी लगाया है। वह पलँग से उतरती थी तो मैं उसकी चारपाई बिस्तर को सीधा करता था। मुझे ऐसा करते हुए अत्यधिक सुख प्राप्त होता था। कितनी प्रसन्नता होती थी यह मैं तुम्हें क्या बताऊँ? मनोभावों को व्यक्त नहीं कर सकता। बस उसके सामने जाकर उसकी इच्छा का दास हो जाता था। वैभव व राज्य का सारा अभिमान मेरे दिल से सर्वथा दूर हो जाता था। इस विनम्रता में मुझे जगतीतल की सब सम्पदा मिल जाती थी परन्तु उस निर्दयी ने सदा ही मुझे दूर–दूर रखा। सम्भवतः वह मुझे अपने योग्य ही नहीं समझती थी। मेरे मन की मन में ही रह गई। वह एक बार अपनी उन मस्तानी रसीली आँखों से मेरी ओर देखती। एक बार अपने लाल–लाल अधरों से मेरी ओर मुस्कराती। मैंने समझा था सम्भवतः वह पूजा ही का पदार्थ है। सम्भवतः उसकी प्रकृति ही कुछ ऐसी बे परवाह है। सम्भवतः उसमें वेदना की प्रेम की अनुभूति ही नहीं है। सम्भवतः वह इन रहस्यों से अपरिचित है। हाँ! मैंने समझा था सम्भवतः अभी अल्हड़पन इसकी अभिव्यक्ति में बाधक है। इसी आशा के साथ मैं अपने पागल घायल हृदय को धीरज बँधाता रहा कि कभी तो मेरी जाँ निसारियां (आत्मोत्सर्ग) सफल होंगी। कभी तो उसके सुप्त भाव जागेंगे।

राजा साहेब एकदम मौन हो गए। फिर मानवीय आकार के दर्पण की ओर दृष्टिपात करते हुए बड़े सन्तोष से सहज भाव से बोले, ''मैं इतना कुरूप तो नहीं कि कोई सुन्दरी मुझसे इतनी दूरी रखे।" राजा साहेब बहुत रौबीले व्यक्ति थे। गठीला लम्बा गात, चौड़ी छाती, सेब समान लाल मुखड़ा, पुरुषों के बाँकपन व सुन्दरता का चित्र थे।

मैंने साहसिक स्वर में कहा, "इस विषय में तो विधाता ने श्रीमान् जी के सामने असाधारण उदारता से काम लिया है।"

राजा साहेब के मुखड़े पर एक हल्की सी क्षणिक उदास मुस्कान दिखाई दी परन्तु फिर वही निराशा छा गई। बोले, सरदार साहेब ''मैंने इस रूप रंग के बाज़ार की जी भर कर सैर की है। काबू करने के, वशीकरण के जितने भी नुस्खे हैं– एक एक से परिचित हूँ परन्तु जिन नुस्खों से मैंने अब तक सदा ही विजय पाई है वे सभी इस अवसर पर प्रभावहीन सिद्ध हुए हैं। अन्ततः मैं यही समझ पाया हूँ कि इस रूपसी में तनिक भी संवेदना नहीं है। परन्तु शोक! इस उपेक्षा और अवहेलना का रहस्य मुझ पर कल ही तो खुला। आह! काश यह भेद अभी कुछ दिन और मुझसे गुप्त ही रहता। कुछ दिनों और मैं इस आत्म–विस्मृति के, इस बेसुधी (बेख़बरी) के संसार में पड़ा रहता।"

क्रमशः....

www.thearyasamaj.org

ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना-मन्त्रों का पद्यानुवाद।

● रामनिवास 'गुणग्राहक'

भावार्थः हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए। और जो कल्याणकारक गुण-कर्म-स्वभाव और पदार्थ हैं, वह सब हमको प्राप्त कीजिए। 1।।

हे सब जग के उत्पादक और सब ऐश्वर्यों के स्वामी।
शुद्ध स्वरूप सकल सुखदाता कृपा करो अन्तर्यामी।।
सारे दुर्गुण, दुर्व्यसनों, दुःखों से हम को दूर करो।
कल्याणकारक, गुण, कर्म, स्वभावों, द्रव्यों से भरपूर करो।।

भावार्थः जो स्व प्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करनेहारे सूर्य, चन्द्रमा आदि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किए हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतनस्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भुमि और सूर्य आदि को धारण कर रहा है। हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति-प्रेम से विशेष भक्ति किया करें। 2।।

स्वयं प्रकाश स्वरूप आपने सूर्य चन्द्रमा रच डाले।
सब जग के नामी स्वामी, ये दो प्रकाश देने वाले।।
जग बनने से भी पहले थे, हे भू-रवि धारण कर्त्ता।
एक सुचेतन रूप योग-भक्ति से भक्त ध्यान धरता।।

भावार्थः जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल का देनेहारा, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं। जिसका आश्रय ही मोक्ष सुखदायक है, जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःखों का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञापालन करने में तत्पर रहें। 3।।

आत्मज्ञान के और शरीरादि बल के भी हो दाता।
तेरी शिक्षा मान भक्ति करना सब देवों को भाता।।
शरण आपकी मोक्ष सुखद है, अशरण मृत्यु दुःख वाली।
आज्ञापालन रूपी भक्ति करें सदा न रहें खाली।।

भावार्थः जो प्राणवाले और अप्राणीरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो इस मनुष्य आदि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ऐश्वर्य के देनेहारे परमात्मा की उपासना अर्थात् अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा-पालन करने में समर्पित करके विशेष भक्ति करें।4।।

प्राणी और अ-प्राणी सबके राजा महिमाशाली।
मनुज और गौ आदि का तन, रचना तेरी निराली।।
हे ऐश्वर्यों के दाता हम तेरी भक्ति करते।
सब उत्तम सामग्री को तेरी आज्ञा में धरते।।

भावार्थः जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य आदि और भूमि को धारण, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण और जिस ईश्वर ने दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश मे सब-लोक लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं। वैसे ही सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है। हम लोग उस सुखदायक कामना करने योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए विशेष भक्ति करें। 5।।

जिस ईश्वर ने उग्र सूर्य-पृथ्वी को धारण किया।
जग का सुख और मोक्षानन्द उसी ने हमको दिया।।
सब लोकों का निर्माता और भ्रमण कराता वो ही।
जो है सुखद-काम्य हम सब भजते उस ईश्वर को ही।।

भावार्थः हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मन् आपसे भिन्न दूसरा कोई इन, उन सब उत्पन्न हुए जड़-चेतन आदि को नहीं तिरस्कार करता है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ की कामना वाले होके हम लोग आपका आश्रय लेवें वे हमारी कामनाएँ सिद्ध होवें जिससे हम धन ऐश्वर्यों के स्वामी होवें वाञ्छा करें। 6।।

हे जग के सच्चे स्वामी, सब से निर्लिप्त आप हैं।
जड़-चेतन से सर्वोपरि का, करते सदा जाप हैं।।
जिस-जिस की हम करें, कामना ,वो सब पूरी कीजे।
धन ऐश्वर्यों के स्वामी भगवन् हमको कर दीजे।।

भावार्थः हे मनुष्यों! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक, वह सब कामों का पूर्ण करने हारा, सम्पूर्ण लोक मात्र और नाम, स्थान, जन्मों को जानता है। जिस सांसारिक सुख-दुख से रहित नित्य आनन्दयुक्त मोक्षस्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं। वही परमात्मा अपना गुरू, आचार्य और न्यायाधीश है अपने लोग मिलकर सदा उसकी भक्ति किया करें। 7।।

वह जगदीश्वर सबको भ्राता-सम सुख देने वाले।
जग-जनिता, सबका ज्ञाता, मोक्षादि वही सम्भाले।।
जग-सुख-दुःख से रहित, मोक्ष में सब विद्वान् विचरते ।
गुरु, आचार्य, न्यायदाता, राजा की भक्ति करते।।

भावार्थः हे स्वप्रकाश-ज्ञानस्वरूप सब जगत् के प्रकाश करने हारे, सकल सुखदाता परमेश्वर ! आप जैसे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं। कृपा करके हम लोगों को विज्ञान व राज्य आदि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइए और हमसे कुटिलतायुक्त पापरूप कर्मों को दूर कर दीजिए। इस कारण हम सदा आपकी भक्ति करते रहें और सर्वदा आनन्द में रहें। 8।।

ज्ञान-प्रकाश स्वरूप! जगत् को आप प्रकाशित करते।
ज्ञान व राज्य प्राप्त करने हित ध्यान आपका धरते।।
अच्छे, धर्मयुक्त, आप्तों के, पथ से हमें चलाओ।
कपट-कुटिलता, पाप-वृत्तियाँ, भगवन् दूर भगाओ।।
इसीलिए हम हे जगदीश्वर भक्ति करें आपकी।
सदा रहें सब आनन्दित, छुट्टी हो पाप-ताप की।।

मो.-07597894991

☞ पृष्ठ 03 का शेष

अंग्रेज़ी शासन की...

दक्षिण भारत को उत्तर भारत के विरोध में खड़ा कर दिया। आज भी तमिलनाडू की यही स्थिति है। उन्होंने देशी राजाओं को परस्पर लड़ाया तथा हिन्दू-मुस्लिम को लड़ाया। हमारी संस्कृति को मिटाया। हमारे सांस्कृतिक प्राचीन संस्कृत साहित्य पर हमला किया। उसकी गलत व्याख्याएं कीं। हमारी पुरातन शिक्षा प्रणाली तथा संस्कृत को ध्वस्त किया। लोगों को धर्म से विमुख बनाकर ईसाइयत का प्रचार किया। हमारे ही देश के सैनिकों तथा अण्डमान के जेलर दुष्ट नारी जैसे अधिकारियों से हमारे देशवासियों को पिटवाया, मरवाया तथा नाना प्रकार की यातनाएँ दिलवाई। अंग्रेजों के और नये काम देखिए- उन्होंने ही कलकत्ता में सर्वप्रथम गोवधार्थ कत्लखाना खुलवाया जिसके परिणामस्वरूप गोवंश समाप्त सा ही हो गया। तभी तो आज घी 500/- किलो है जबकि पहले चार पैसे में एक सेर मिलता था। उन्होंने ही कलकत्ता में सर्वप्रथम वेश्यालय खुलवाया। पत्नी से दूर भारत में रहने वाले अंग्रेजों को उसकी आवश्यकता थी। परिणाम देखिए आज भारत की कितनी बालाओं की जिन्दगी इन वेश्यालयों में नरक बनी हुई है। उन्होंने ही हमें चाय पीनी सिखाई। पहले पीने वाले को पैसा देकर सड़कों पर मुफ्त चाय पिलायी जाती थी। आज वही चाय सात रुपये प्रति कप है। दूध 50/-किलो। दूध कौन पियेगा? सबसे बड़ी बात अंग्रेजों ने हमें अंग्रेज़ी तथा अंग्रेजियत की जो गुलामी दी है, उससे भारत पता नहीं कब उबरेगा? कब वह स्वभाषा तथा स्वसंस्कृति का सम्मान करेगा।

मुसलमानों ने घोर अत्याचार किए, किन्तु अंग्रेजों ने तो अत्याचार भी किए तथा हमें मानसिक दास भी बनाया। यह काम मुस्लिम शासकों ने नहीं किया था। कुछ ही विदेशी मुस्लिम लुटेरे भारत को लुट कर ले गये, किंतु अंग्रेज़ी शासन ने तो सम्पूर्ण रूप से खुले आम भारत को लूटा। मुस्लिम शासन से मुक्ति में अंग्रेजों का हाथ नहीं। यह मुक्तिसंग्राम तो प्रताप तथा शिवाजी के काल से चल रहा था। कभी न कभी भारत को अपनी स्वतंत्रता के लिए खड़ा होना ही था। अंग्रेजों से समय की पाबन्दी, बाल विवाह निषेध जैसी अच्छाइयाँ हैं। भारत ऐसी बुराइयों के कारण ही पतन के गर्त में गिरा। इसी लिए स्वामी जी ने अंग्रेजों की अच्छाइयों की ओर भारतीयों का ध्यान खींचा। इसका यह अर्थ नहीं कि वे अंग्रेज़ी राज्य के समर्थक बन गए या अंग्रेज़ी राज्य हमारे लिए वरदान बना। वह तो मुस्लिम शासन की भाँति अभिशाप ही था। पता नहीं गर्ग जी को उसकी प्रशंसा अब क्यों करनी पड़ रही है।

266, सरस्वती विहार, दिल्ली
मो. 9868144317

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की विविधता एवं विलक्षणता

● डॉ. सुशील वर्मा

महर्षि दयानन्द सरस्वती को मात्र समाज सुधारक, कट्टर राष्ट्रवादी, पंथो का कटु आलोचक, वैचारिक क्रान्ति वाली आर्य समाज संस्था का संस्थापक मान लेना ही काफी नहीं। उनका मूल्यांकन इस तथ्य से भी अधूरा है कि उन्हें नारी शिक्षा, अछूतोद्धार, अज्ञानता, अन्धविश्वास एवं पाखण्डों पर कड़ा प्रहार किया, जाति–प्रथा–उन्मूलन, जाति जन्म से नहीं अपितु कर्म से स्वीकार्य हो, ऐसा मानना। यह सत्य है कि आज हम उनसे प्रेरित होकर प्रचलित सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक पाखण्डों एवं अंधविश्वासों से जूझ रहे हैं। वह युग पुरुष मानवतावादी, वैश्व संस्कृति के उद्गाता, विश्वशान्ति का महानायक, साम्प्रदायिक सद्भावना का उन्नायक, अन्याय अज्ञानता एवं शोषण के विरूद्ध संघर्षरत कालजयी योद्धा रहे। इन सब से बढ़कर उन्होंने विद्वत समाज को वेदभाष्य की कुंजी प्रदान की, जिसके द्वारा पश्चिमी वेदज्ञों द्वारा वेदों पर हो रहे अनर्गल एवं कुप्रचार के प्रहारों को रोका गया। परिणामस्वरूप वेदों के उदात्त, विशाल, उत्कृष्ट एवं गंभीर स्वरूप को स्थापित किया गया। वहीं पाश्चात्य विद्वान वेदों में इतिहास तलाशने में जुटे रहे। कभी तुलनात्मक भाषा विज्ञान, कभी तुलनात्मक वेद गाथा तो कभी डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत को प्रतिपादित करने हेतु वेदों का सहारा लेते रहे। धन्य है वह वेदज्ञ सन्यासी ऋषि दयानन्द, जिसने व्याकरण पर आधारित, निरुक्त में व्युत्पत्ति प्रधान प्रणाली एवं दर्शन को प्राथमिकता देकर वेदार्थ किया। उनका यह उद्घोष "वेदों की ओर लौट चलो" भारतीय संस्कृति एवं आर्ष विचार धारा की विजय गाथा बनी। महर्षि दयानन्द के वेद विषयक विचार सर्वाधिक क्रान्तिकारी थे। उनकी मान्यता थी कि वेदों में मनुष्य की सर्वांगीण इहलौकिक एवं पारलौकिक उन्नति के उपाए बताए गए हैं। यही मानव का सर्वविध उत्थान का मार्ग है। एक ओर तो दयानन्द का यह उदान्त दृष्टिकोण तथा दूसरी ओर सायण आदि मध्यकालीन भाष्यकारों ने कर्म काण्ड परक अर्थ कर वेदार्थ को निम्नस्तर पर लाकर खड़ा कर दिया। सायण, उव्वट, महीधर आदि भाष्यकार वेद मन्त्रों में निहित गूढ दार्शनिक आध्यात्मिक एवं मनौवैज्ञानिक अर्थों को समझ ही न पाए।

स्वामी जी की विलक्षणता है कि वेदों के प्रसंग आने पर वह यज्ञ अथवा कर्म की ही बात नहीं करते। अपितु यज्ञ एवं कर्म को उन्होंने सदा ही व्यापक अर्थ में लिया। व्यष्टि एवं समष्टि के हित में किए जाने वाले सभी परोपकार पूर्ण कृत्य यज्ञ है। यज्ञ होम, अग्निहोत्र का ही पर्याय नहीं अपितु हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक अभ्युत्थान हेतु किए जाने वाले लोकहित कर्मों की समष्टि है। उनका यजुर्वेद भाष्य संकेत करता है कि समष्टि भाव से किए जाने वाले कर्म यज्ञमय हो जाते हैं। इसलिए सम्पूर्ण सृष्टि भी यज्ञमयी है, राजा का सुराज्य भी यज्ञ है, शिल्पविद्या भी यज्ञ है। उन्होंने तो गृहस्थ जीवन को भी यज्ञ कहा है। ईश्वर, विज्ञान और ईश्वरराज की पालना भी यज्ञ है। इतना ही नहीं दुष्टों का नाश भी यज्ञ है मन्त्र विद्या भी यज्ञ है। यही सार है शतपथ ब्राह्मण के वाक्य "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" का।

सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा द्वारा ऋषियों के माध्यम से हमें वेद रूपी ज्ञान प्रदत किया गया। उसी ईश्वरीय ज्ञान वेद के साथ ही यज्ञ का प्रादुर्भाव सृष्टि के उद्भव स्थिति और विकास के अनुरूप हुआ। कलान्तर में त्रेतायुग के आते–आते वेदार्थ प्रक्रिया में दो नए वादों में जन्म लिया एक दैवतवाद, और दूसरा याज्ञिकवाद। जैसे जैसे यज्ञों की प्रधानता बढ़ती गई वेद का आधिदैविक और आध्यात्मिक स्वरूप गौण होता गया। परिणामतः याज्ञिक वेदार्थ की प्रमुखता बढ़ती गई। "यतार्थ वेदा प्रवृताः" का वाद प्रबल होता गया। प्रत्येक कामना की सिद्धि के लिए यज्ञों की रचना हुई और समस्त यज्ञों की विविध क्रियाओं के अनुरूप वेद मन्त्र उपलब्ध न होने पर भी मन्त्रार्थ की उपेक्षा कर याज्ञिक क्रियाओं के साथ उनका सम्बन्ध जोडना एवं मन्त्रार्थ के विपरीत विनियोगों का प्रारम्भ हुई यज्ञों में बलि दी जाने लगी और यह सब कुछ वेदों के नाम पर। जिसके परिणामस्वरूप वेदों के प्रति अनास्था एवं घृणा ने जन्म लिया। नास्तिक दर्शन कहे जाने वाले जैन एवं बौद्ध धर्मों का प्रादर्भाव हुआ। वेदों को "गडरियों के गीत" कहे जाने लगा। ऐसे समय में देव दयानन्द ने वेदार्थ को नया आयाम दिया। आर्ष एवं ऋषि परम्परागत निरुक्त पद्धति को स्थापित कर वेदार्थ को वास्तविक एवं उत्कृष्ट रूप में प्रतिपादित कर वेदों का सम्मान बढ़ाया।

जहाँ पर स्वामी जी ने वेद भाष्य को आधिदैवत एवं आध्यात्मिक स्वरूप में प्रकट किया वहीं यज्ञ को नए रूप में प्रभावित किया। सन्ध्या हवन की नई पद्धति दी। इनमें आर्ष ग्रन्थों, गृह्य सूत्रों एवं ऋषि परम्परा को सम्मान दिया गया।

तुलनात्मक अध्ययन के लिए यदि हम पंच महायज्ञों में से प्रथम ब्रह्मयज्ञ "सन्ध्या" की चर्चा करें तो पौराणिक परम्परा का विवरण हमें आचार्य विश्वश्रवा की पुस्तक "सन्ध्यापद्धतिमीमांसा" में प्राप्य है। उनके अनुसार पौराणिक सन्ध्या पद्धति में आचमनों की भरमार है और आचमन के मन्त्रों का आचमन से कोई सम्बन्ध नहीं। गायत्री में परमात्मा को भर्ग शुद्धस्वरूप के बजाय सूर्य को देखकर खड़े होकर घूमना और पुण्डरीकाक्ष कमल के सी आंखों वाले का सोचना कहाँ तक उचित है। उन्होंने एक ओर तो गायत्री मंत्र को स्वरूप धारिणी स्त्री मान लिया है वहीं दूसरी ओर गायत्री मंत्र को सूर्य के लिए समझ लिया है। उनका एक पाँव पर खड़ा होकर नृत्य सा करना विचित्र गायत्री अनुष्ठान है।

इसके विपरीत स्वामी जी द्वारा कृत सन्ध्या पद्धति में स्तुति प्रार्थना उपासना का क्रम है क्योंकि स्तुति का फल ज्ञान है, प्रार्थना का फल अहंकार उन्मूलन और जब ये दोनों सिद्ध हो जायें तब परमात्मा के गुणों के प्रकाश में अपने गुण कर्म स्वभाव को बनाने से उपासना सिद्ध होती है। उस परमपिता का सान्निध्य प्राप्त होता है।

उनकी पद्धति में "शन्नो देवी" मन्त्र से शम् की यात्रा आरम्भ होती है और उपसंहार भी उसी शब्द शंम् (शम्भव, शंकर एवं शिव) से हुआ।

स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित पद्धति में पारम्परिक ग्रन्थों की मान्यता को प्रत्यक्ष रख आचमन का सर्व प्रथम विधान है। शतपथ ब्राहमण का प्रथम मन्त्र यही आदेश देता है कि आचमन पवित्रता, शुचिता एवं सौम्यता का प्रतीक है। इसी भावना से प्रेरित हो उन्होंने "शन्नो देवी मन्त्र" का विनियोग किया। उनसे पहले किसी ने भी इस मन्त्र का विनियोग आचमन के लिए नहीं प्रयोग किया। सभी ने "आपः" शब्द का अर्थ केवल मात्र जल ही लिया परन्तु स्वामी जी ने जल के अतिरिक्त इसे ईश्वर परक अर्थ देकर नया विनियोग किया। मन्त्र को एक उत्कृष्ट एवं ईश्वर परक अर्थ के सन्ध्या की पवित्रता एवं आत्मोसर्ग का साधन प्रतिष्ठित किया। तत्पश्चात इन्द्रियों और मन की चंचलता दूर कर एकाग्रता तथा स्वस्थ आत्मा हेतु प्राणायाम का विधान किया। यही योग क्रिया का उदेश्य है। अशुद्धि का नाश, ज्ञान का प्रकाश और मुक्ति पर्यन्त यह ज्ञान वृद्धि।

योगाङ्गानुष्ठानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्ति विवेकव्याते (योग साधनापाद सूत्र 18)

इसके बाद अघमर्षण मन्त्रों का विनियोग नासदीत् सूत्र (ऋग् 1.10. 1.90) अर्थात् मन की पाप भावनाओं को निर्मूल करना मन की स्थिरता के लिए मनसा परिक्रमा मन्त्रों का चयन उस परमात्मा के व्यापकता (विष्णु) की अनुभूति करवाकर परम सत्ता जो कि सभी का अधिष्ठाता है, रक्षक है, वाण रूपी सुरक्षा प्रदान करता है। द्वेष भाव को छोड़ परमात्मा की न्याय व्यवस्था में विश्वसनीयता स्थापित करना। उपस्थान मन्त्रों का विनियोग, ताकि मनुष्य को ज्ञान हो सके कि वह परमपिता जगत के चेतन और स्थावर पदार्थों में व्याप्त है। "सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च"। उसकी सत्ता का जगह–जगह पर बोध हो रहा है "केतवं दृश्ये विश्वाय सूर्यम्" और वही हमारी आत्मा में प्रकाशित हो रहा है।

गायत्री अनुष्ठान करते हुए समर्पित भाव से प्रार्थना कि वह परमपिता परमात्मा हमें धर्म अर्थ काम मोक्ष की सिद्धि शीघ्रता से प्राप्त कराए। धर्म के द्वारा ही अर्थ की प्राप्ति, धर्म आधारित ही कामनाएँ फलीभूत हो। यदि सभी धर्म आधारित हो तो फिर मोक्ष का रास्ता सुगम हो जाएगा।

अन्त में समर्पण रूप में उस परम सत्ता के प्रति नतमस्तक हो नमस्कार मन्त्र का विनियोग उनकी विलक्षणता है उनका विवेक है। कहाँ पौराणिक समाज की सन्ध्या और कहाँ स्वामी जी की विद्वता पूर्वक ब्रह्मयज्ञ पद्धति। धन्य है वह ऋषि धन्य है उनके द्वारा मन्त्रों का सार्थक विनियोग। यही वास्तविक रूप है ऐतरेय ब्राह्मण के कथन के अनुरूप यज्ञ की रूप समृद्धि का

"एतद्वै यज्ञस्य समृद्धं यत् रूपसमृद्धं
यत्कर्म क्रियामाणमृगभिवदति"

इसी प्रकार उनके मन्त्र विनियोग की विलक्षणता देवयज्ञ एवं अन्य यज्ञों में भी द्रष्टव्य है। धन्य है वह ऋषि धन्य है उनके वेदार्थ एवं यज्ञ पद्धति।

मास्टर मूलचन्द वर्मा गली
फाजिलका 152123, (पंजाब)
मो. 9217832632

www.thearyasamaj.org

अथ नवसंवत्सर यज्ञविधिः

● पण्डित वेद प्रकाश शास्त्री

ईश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना मन्त्रों का उच्चारण अर्थ सहित करके समयानुसार बृहद् यज्ञ करें। तत् पश्चात् अग्रलिखित मन्त्रों से विशेष आहुतियां दें, अर्थवाचन भी करें–

ओ३म् संवत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसि इदावत्सरोऽसि इद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि। उषसः ते कल्पन्तां अहोरात्राः ते कल्पन्तां अर्द्धमासाः ते कल्पन्तां मासाः ते कल्पन्तां ऋतवः ते कल्पन्तां संवत्सरः ते कल्पताम्। प्रेत्या एत्यै सं चाञ्च प्रयाच सारय। सुपर्णचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद स्वाहा।। 1 ।। यजु. 27/45

हे संवत्सर! तुम्हीं समस्त प्राणिसमुदाय को अपने अन्दर सुखपूर्वक बसाते हो, चारों ओर से भी बसाते हो और निश्चयपूर्वक बसाने वाले हो। तुम्हारी उषाएं, अहोरात्र, शुक्ल एवं कृष्णपक्ष, मास, ऋतु तथा वर्ष सभी के लिए समर्थ और समृद्धि से परिपूर्ण हों। अपने प्राण से समस्त प्राणियों को समर्थ बनावें। शरीर तथा मन की शक्ति को पूर्ण करने वाले संवत्सर! तुम अपनी शक्तियां हमारी प्रगति के लिए प्रसारित करो और हे प्राणमय! सुन्दर रक्षा के साधनों के संचयकर्ता! तुम स्थिर रहते हुए हमें अपनी दिव्यशक्ति के साथ प्राणमय बनाओ।

ओ३म् ऋतवस्ते यज्ञं वि तन्वन्तु मासा रक्षन्तु ते हविः।
संवत्सरस्ते यज्ञं दधातु नः प्रजां च परि पातु नः स्वाहा।।2।। यजु. 26/14

हे विद्वन्! आपके सत्कारादि व्यवहार को वसन्तादि ऋतुएं विस्तृत करें। आपके हवन के योग्य वस्तुओं की चैत्रादि मास रक्षा करें। आपके यज्ञ को हमारा वर्ष अर्थात् संवत्सर पुष्ट करे। हमारी प्रजा की सब ओर रक्षा करे। यह संवत्, ऋतुएं आदि देवपूजा, संगतिकरण, दान, बल, विद्या, बुद्धि की वृद्धि में निरन्तर सहायक हों।

ओ३म् समास्त्वाग्न ऋतवो वर्द्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या।
सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आ भाहि प्रदिशः चतस्रः स्वाहा।।3।। यजु. 27/1

हे यज्ञशील मनुष्यो! वर्षा, शरद् आदि ऋतुएं, प्रभवादि संवत्सर, मन्त्रों को जानने वाले विद्वान् ऋषि और जो सत्य कर्म हैं, वे आपको बढ़ावें। जैसे अग्निशुद्ध प्रकाश सब उत्तम गुणयुक्त चारों दिशाओं को प्रकाशित करता है, वैसे विद्या की सुन्दर प्रकाश कीजिए और न्याययुक्त धर्म का अच्छी प्रकार प्रकाश कीजिए।

ओ३म् यां देवाः प्रतिनन्दन्ति रात्रिं धेनुमुपायतीम्।
संवत्सरस्य या पत्नी सा नो अस्तु सुमंगली स्वाहा।।4।। अथर्व. 3/10/2

महात्मा पुरुष या सूर्य, वायु, चन्द्रादि दिव्य पदार्थ पास आती हुई तृप्त करने वाली जिस दानशीला और ग्रहणशीला शक्ति या रात्रिरूप प्रकृति का अभिनन्दन करते (धन्य मानते) और जो यथावत् निवास देने वाले परमेश्वर की पालन शक्ति है, वह हमारे लिए बड़े मंगल करने वाली होवे।

प्रकृति ईश्वर नियम से पदार्थों को उत्पन्न करके जीवों को सुख देकर उनका दुःख हरती है। विज्ञानी पुरुष विविध प्रकार के आविष्कार करके उनसे लाभान्वित होकर सदैव उन्नति करते रहते हैं।

ओ३म् संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वां रात्र्युपास्महे।
सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज स्वाहा।।5।। अथर्व. 3/10/3

हे सुखदात्री और दुःखहर्त्री रात्रिरूप प्रकृति! यथावत् निवास देने वाले परमेश्वर की प्रतिमा या प्रतिनिधि सर्वत्र व्यापिनी तुमको हम भजते हैं। वह लक्ष्मी तू हमारे लिए चिरंजीविनी प्रजा को धन की बढ़ती के साथ संयुक्त कर।

अनन्त परमेश्वरी प्रकृति के सूक्ष्म और स्थूल रूप के ज्ञान से उपकार लेकर हम अपनी सन्तान के सहित धनी, स्वस्थ और चिरंजीवी बने रहें।

ओ३म् आयमगन्त्संवत्सरः पतिरेकाष्टके तव।
सा न आयुष्मतीं प्रजां रायस्पोषेण सं सृज स्वाहा।।6।। अथर्व. 3/10/8

अकेली व्यापक रहने वाली हे शक्तिरूप प्रकृति! यह यथावत् निवास देने वाला तेरा स्वामी एवं रक्षक परमेश्वर प्राप्त हुआ है। वह तू लक्ष्मी रूप में हमारे लिए बड़ी आयु वाली प्रजा को धन की बढ़ती के साथ संयुक्त कर।

विद्वान् साक्षात् कर लेते हैं कि परमेश्वर ही प्रकृति, जगत् सामग्री का स्वामी अर्थात् उसके अंशों का संयोजक और वियोजक है। प्रकृति के यथावत् प्रयोग से मनुष्य अपनी सन्तान सहित चिरंजीवी और धनी होते हैं।

ओ३म् ऋतून् यज ऋतुपतीन् आर्तवानुत हायनान्।
समाः संवत्सरान् मासान् भूतस्य पतये यजे स्वाहा।।7।। अथर्व.3/10/9

ऋतुओं, ऋतुओं के स्वामियों (सूर्य, वायु आदि), ऋतुओं में उत्पन्न होने वाले प्राप्ति योग्य चावल आदि पदार्थों से यथाविधि निवास देने वाले, कर्मों को नापने वाले महीनों और सब अनुकूल क्रियाओं को सत्ता में आए हुए जगत् के पति को मैं बार-बार अर्पण करता हूँ।

तत्त्वज्ञानी पुरुष ग्रीष्म, वर्षा, शीतादि ऋतुओं और उनके कारण सूर्य, चन्द्र, वायु, पृथिवी आदि एवं संसार के अन्य पदार्थों तथा क्रियाओं का आदि कारण जगत् पिता परमेश्वर को मानते, स्तुति करते और उसका धन्यवाद करते हैं।

ओ३म् ऋतुभ्यष्ट्वा आर्तवेभ्यो माद्भ्यः संवत्सरेभ्यः।
धात्रे विधात्रे समृधे भूतस्य पतये यजे स्वाहा।।8।। अथर्व. 3/10/10

हे प्रकृति! तुझको ऋतुओं के लिए, ऋतुओं में उत्पन्न पदार्थों के लिए, महीनों के लिए और यथावत् निवास देने वाले वर्षों अर्थात् संवत्सरों के लिए, धारण करने वाले जगत् के पति के लिए मैं समर्पण करता हूँ।

ओ३म् यस्मान्मासा निर्मिताः त्रिंशदराः संवत्सरो यस्मान्निर्मितो द्वादशारः।
अहोरात्रा यं परियन्तो नापुः तेनौदनेनाति तराणि मृत्युं स्वाहा।।9।। अथर्व. 4/35/4

जिस परमात्मा से तीस अरों वाले महीने बने हैं। जिससे बारह अरों के समान बारह महीनों वाला संवत्सर बना है। जिसको घूमते हुए दिनमान नहीं पकड़ सके हैं। भगवन्! यह संवत्सर मुझे मृत्यु की ओर खींचता चला जा रहा है परन्तु मैं आपका आश्रय लेकर उसको भी पार कर जाऊं।

परमात्मा ने दिन रात आदि कालचक्र बनाया है परन्तु वह अनादि अनन्त होने से काल के अधिकार से बाहर है। सब मनुष्यों को उसी परमात्मा की उपासना करनी चाहिए।

ओ३म् द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं द्यामृतस्य।
आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः स्वाहा।। 10।। ऋ. 1/164/11

यह परमात्मा का चक्र निरन्तर चल रहा है। यह कभी जीर्ण नहीं होता। यह बारह मास रूपी बारह अरों का बना हुआ है। इसमें तेरे सात सौ बीस पुत्र अर्थात् तीन सौ साठ दिन और तीन सौ साठ रात्रियां जोड़ा बना कर रह रहे हैं।

ओ३म् द्वादश प्रधयः चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शंकवोऽर्पिताः षष्टिः न चलाचलासः स्वाहा।। 11।। ऋ. 1/164/48

तीन सौ साठ लगे हुए अरे ही मानो रथ रूपी वर्ष के तीन सौ साठ दिन हैं। बारह पहिए ही बारह महीने हैं। तीन पहियों के बीच नाभि का तात्पर्य वर्षा, शीत और ग्रीष्म तीन ऋतुएं हैं जिनसे वर्ष जुड़ा हुआ है। इस प्रकार दिन, ऋतु और वर्ष रूपी कालचक्र का रथ निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है।

ओ३म् पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्द्धे पुरीषिणम्।
अये मे अन्थे उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे षकर आहुरर्पितं स्वाहा।। 12।। ऋ. 1/164/12

कुछ विद्वान् समस्त प्रजा के पालक इस संवत्सर को जिसके क्षण, मुहूर्त, प्रहर, दिवस, पक्ष ये पांच पाद हैं, बारह महीने जिसके विविधि आकार हैं, द्युलोक के परम प्रकाश में वर्तमान बताते हैं। कुछ अन्य विद्वज्जन इस संवत्सर को छः ऋतुओं के अरों से जुड़ा हुआ सूर्याश्व से खींचे जाते हुए रथ का चक्र बताते हैं।

पूर्णाहुति के पश्चात् पुरोहित एवं विद्वद्वर्ग को पुष्प वितरित करें। पुरोहित मंगलकामना करते हुए आशीर्वचन बोलें–

मंगलं करोतु कल्याणं आरोग्यं धनसम्पदः।
वर्धयतु 'वेद'–ज्योतिश्च शुभंकरो भवतु नवसंवत्सरः।।
मंगल करे अरु कल्याण भी, दे आरोग्य औ धन-संपदा।
'वेद'–ज्योति का वर्धन करे, नवसंवत्सर हो शुभकारी सदा।।
ओ३म् सत्याः सन्तु सर्वेषां कामाः।।
ओ३म् सफलाः सन्तु सर्वजनानां कामाः।।
ओ३म् सौभाग्यं अस्तु। ओ३म् शुभं भवतु।।
ओ३म् स्वस्ति स्वस्ति स्वस्तिः।।

शान्तिपाठ और प्रसाद वितरण करें।।

इति नवसंवत्सर यज्ञविधिः।।

शास्त्री भवन, 4 ई, कैलाश नगर
फाजिल्का–152123 (पंजाब)
मो. 9463428299

www.thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 02 का शेष

आनन्द गायत्री कथा

कभी नहीं त्यागता; यज्ञ से कभी विमुख नहीं होता। जो यज्ञ को त्याग देता है, उसे ईश्वर भी त्याग देता है। क्यों जी! इससे बड़ी भी कोई हानि तीन लोक में हो सकती है? जिसे ईश्वर ही छोड़ दे, उसके पास शेष रह ही क्या गया? उसकी रक्षा करने वाला कौन हो सकता है? कहीं उसको सुख नहीं मिल सकता। सुख और शान्ति उससे कोसों दूर भागेंगी, क्योंकि सुख और शान्ति तो ईश्वर में व्याप्त हैं या समाविष्ट हैं। ईश्वर ने छोड़ दिया जिसे, सुख और शान्ति ने छोड़ दिया उसको। महर्षि अर्थ करते हुए लिखते हैं– यज्ञ करने वाला यज्ञ–सामग्री को किसलिए अग्नि में आहुति देता है? सबको सुख देने के लिए, सबको पुष्टि देने के लिए, धन के लिए, राज्य के लिए, कीर्ति के लिए। जो वस्तु यज्ञ से शुद्ध किए बिना ही प्रयोग में लाई जाती है वह राक्षसी बन जाती है। उसको खाने से और प्रयोग में लाने से मनुष्य भी राक्षस बन जाता है; तब उसका पतन होता है और वह निरन्तर अवनति के गर्त में गिरता जाता है।

यह है यज्ञ की उत्कृष्टता। वेद भगवान् ने इसे इतना ऊँचा स्थान दिया है जितना अन्य किसी वस्तु अथवा कार्य को नहीं दिया। महर्षि दयानन्द से पूर्व या तो यज्ञ होते नहीं थे या हिंसा के आधार पर होते थे। यज्ञ का अभिप्राय प्रत्येक प्राणी को लाभ और सुख देना है। उसमें हिंसा के लिए स्थान कहाँ है? किसी जीव को मृत्यु के घाट उतार देना उसे लाभ पहुँचाना नहीं है। यज्ञ करना धर्म है। यज्ञ के साथ हिंसा करना धर्म नहीं है।

किन्तु जैसाकि मैंने पिछली बार बतलाया था, यज्ञ के अतिरिक्त एक और धर्म भी है जिससे लोक और परलोक सुधरते हैं; लोक और परलोक के सम्बन्ध में मनुष्य का धर्म पूरा होता है। वह है गायत्री मन्त्र। पिछली बार मैंने कहा था, गायत्री का शाब्दिक अर्थ है वह मन्त्र जिसको गाने से, जिसका जाप करने से मनुष्य का उद्धार हो जाता है। आज 'महाभारत' के अनुशासन–पर्व की एक कहानी सुनिए! अनुशासन–पर्व के एक सौ पचासवें अध्याय में महाराज युधिष्ठिर से भीष्म पितामह से कितने ही प्रश्न किए। उनमें से एक प्रश्न मैं आपको पढ़कर सुनाता हूँ। युधिष्ठिर ने पूछा, "हे पितामह! हे महाविद्वन्! कहिए वह मन्त्र कौन–सा है जिसको सदैव जपने से धर्म का भारी लाभ होता है? जिसको चलते–फिरते, उठते–बैठते, किसी स्थान पर जाते समय, किसी स्थान से आते समय, किसी कार्य को प्रारम्भ करते समय और किसी कार्य को समाप्त करते समय, प्रत्येक समय पढ़ा जा सकता है? जिसके जाप से आनन्द, शान्ति सुख–रक्षण मिलता है? धन–सम्पत्ति और राज्य मिलता है? जिसके जाप करने से भय का नाश होता है? जो वेद के अनुकूल है?"

यह प्रश्न पूछा महाराज युधिष्ठिर ने। युधिष्ठिर स्वयं भी विद्वान् थे। 'महाभारत' में उन्हें 'धर्म का बेटा' कहा गया है। किन्तु भीष्म उनसे भी अधिक विद्वान् थे। युधिष्ठिर के प्रश्न को सुनकर उन्होंने कहा– "युधिष्ठिर! जो मनुष्य गायत्री का जाप करते हैं, उन्हें हाथी, घोडे, रथ, विमान, सब–कुछ मिलता है। उन्हें देश और विदेश से यश प्राप्त होता है। गायत्री का जाप करने वालों को राजा, राक्षस, शत्रु, सर्प और तीक्ष्ण विष, कोई भी हानि नहीं पहुँचा सकता। चारों वर्ण और चारों आश्रम उसका जाप करके सुख–शान्ति प्राप्त करते हैं। जहाँ गायत्री का जाप होता है, वहाँ अग्नि कोई क्षति नहीं पहुँचा सकती है। वहाँ के सर्प भाग जाते हैं। वहाँ शिशु नहीं मरते। वहाँ गऊओं की सन्तान में वृद्धि होती रहती है। जाते समय, आते समय, कार्य को प्रारम्भ करते समय, समाप्त करते समय, प्रत्येक समय गायत्री का जाप किया जा सकता है।" यह है गायत्री की महिमा! इतना बड़ा कोष तुम्हारे सम्मुख प्रस्तुत है। सुनो मेरी माताओं! सुनो मेरे बच्चों! इसके बाद भी लाभ न उठाया तो दोष किसका? किन्तु भीष्म ने इससे आगे भी कहा, "हे युधिष्ठिर! जो ऋषि लोग जाप करते हैं, उन जाप करने वालों का यह गायत्री परमजाप है। सदैव से ऋषि लोग इसका जाप करते रहे हैं। इसका गायन करते रहे हैं। सभी राजा लोग, सभी वीर और सभी विद्वान्, चाहे वे सूर्यवंशी थे या चन्द्रवंशी, या कौरववंशी, इसी के जाप से यश, धन, शक्ति और आनन्द को प्राप्त हुए।"

इतनी महिमा है इस मन्त्र की। इस गायत्री मन्त्र को गुरु मन्त्र कहा गया है। चारों वेदों में लगभग बीस सहस्त्र मन्त्र हैं। उनमें से इसी गायत्री को गुरुमन्त्र क्यों कहा गया? क्यों प्रत्येक वेद में, प्रत्येक शास्त्र में, प्रत्येक ग्रन्थ में गायत्री को इतना सम्मान प्रदान किया गया? 'यजुर्वेद' में तो बारम्बार गायत्री की प्रशंसा आती है। 'ऋग्वेद' और 'सामवेद' में भी आती है। किन्तु 'अथर्ववेद' में गायत्री की प्रशंसा करते हुए कमाल कर दिया है। उसका यह मन्त्र सुनिए!

(स्वामी जी ने गाकर यह मन्त्र सुनाया। आँख मूँदकर, मुखमण्डल को आकाश की ओर किया। जब वे गा रहे थे तो ऐसा लगता था, जैसे गायत्री माता उनके सम्मुख खड़ी हैं। वे देख रहे हैं और उसको देखकर कह रहे हैं–)

अहा! कितना सुन्दर है यह मन्त्र! गायत्री इसका देवता है। मन्त्र के देवता का अभिप्राय यह है कि इस मन्त्र में गायत्री का वर्णन है। गायत्री का उल्लेख करते हुए भगवान् की अमृतवाणी में भक्त कहता है– मैंने वेदमाता, वरदान की देनेवाली गायत्री का जाप किया है, उसकी उपासना की है, उसकी गोद में बैठा हूँ। कैसी है वह माँ प्रेरणा करने वाली? जो धर्मवाले हैं उन्हें पवित्र करनेवाली और...

मैंने आपसे कहा था गायत्री लोक और परलोक, दोनों का सुधार करने वाली है। उन सब पदार्थों को प्रदान करने वाली है जो इस लोक और परलोक में हमें चाहिए। क्या–क्या वे वस्तुएँ है? प्रत्येक वस्तु जो आप चाहते हैं उसका वर्णन इस प्रथम मन्त्र में आएगा।

वेद कहता है– 'गायत्री सर्वप्रथम आयु देती है।'

प्रत्येक मनुष्य को आयु के सम्बन्ध में चिन्ता रहती है। जहाँ कहीं मैं जाता हूँ, वहाँ यही सुनता हूँ। स्त्रियों को चिन्ता है कि उनके पतियों की आयु दीर्घ हो। पति को चिन्ता है कि उसकी पत्नी कहीं उसको मार्ग में ही छोड़कर न चली जाए। माता–पिता को चिन्ता है कि उनकी सन्तान की आयु उनसे अधिक हो। प्रत्येक की सर्वप्रथम इच्छा आयु के सम्बन्ध में होती है और वेद कहता है– 'गायत्री सर्वप्रथम आयु देती है।' किन्तु कैसे आयु प्रदान करती है गायत्री? क्या क्षय के रोगी की आयु, अधरंग के रोगी की आयु, जिससे तंग आकर लोग मृत्यु की इच्छा करते हैं? नहीं। ऐसी आयु नहीं, अपितु ऐसी आयु जिसमें 'प्राण' हों।

क्रमशः....

॥ ओउम् ॥

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा

जिला राजकोट-363650 (गुजरात) दूरभाष : 02822-287756

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव का आयोजन 23,24,25 फरवरी 2017 (गुरुवार, शुक्रवार , शनिवार) को महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ : 18 फरवरी से 24 फरवरी 2017 तक

ब्रह्मा : आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत : श्रीमती अंजलि (करनाल), श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष : **श्री पूनम सूरी**

(प्रधान, डी ए वी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा)

बोधोत्सव

दिनांक 24-02-2017

मुख्य अतिथि :माननीय श्री विजय रूपाणी (मुख्यमन्त्री गुजरात सरकार)

विशिष्ठ अतिथि : श्री एच आर गन्धार (प्रशासक डी ए वी यूनिवर्सिटी, जालन्धर)

अध्यक्षता श्रद्धांजलि सभा : श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात)

कार्यक्रम के आमन्त्रित विद्वान्

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक (रोजड़)स्वामी आर्येशानन्द (माउन्ट आबू) , स्वामी शान्तानन्द (गुजरात) श्री मोहन भाई कुण्डारिया (स्थानीय सांसद) श्री बल्लभभाई कथीरिया (अध्यक्ष गौ सेवा सदन गुजरात) श्री बावनभाई मेटालिया (स्थानीय विधायक), श्री कान्ति भाई अमरतिया (विधायक मौरबी),डॉ0 धर्मेन्द्र शास्त्री (पूर्व सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी) श्री एस के शर्मा (मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा) श्री गिरीश खोसला (यू एस ए) श्री वाचोनिधी आर्य (गांधीधाम) एवं इसके अतिरिक्त देश विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यों के लिए एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/ कास चैक/ ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा " श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला राजकोट-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपनी आर्य समाज, शिक्षण संस्थान तथा सम्बन्धित संस्थाओं की ओर से अधिकाधिक राशि भिजवाने की कृपा करें और ऋषि ऋण से उऋण होकर पुण्य के भागी बनें। बाहर से आने वाले ऋषि भक्त ऋतु अनुकूल हल्का बिस्तर साथ लावें और आने की पूर्व सूचना टंकारा अथवा दिल्ली कार्यालय को अवश्य देवें , जिससे व्यवस्था बनाई जा सके।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

आप दान राशि सीधे पंजाब नैशनल बैंक खाता नं0 46650001000010671FSC PUNB0466500 में भी जमा करा सकते हैं। कृपया जमा राशि की सूचना दिल्ली कार्यालय को जमा रसीद, अपने पूरे पते सहित अवश्य भेजें ताकि आपको दान की रसीद भेजी जा सके।

निवेदक

शिवराजवती आर्या — उपप्रधाना

रामनाथ सहगल — मन्त्री

www.thearyasamaj.org

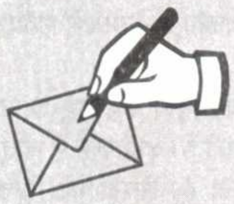

पत्र/कविता

भूले यदि तुम आज को कल कैसे बन पाय

कैसे पाया शिखर को , जान जरुरी बात।
दिया अगर ईमान तो, गिरी हुई औकात।।
क्यों खाली तू बैठता, समय बीतता जाय।
बीता समय न लौटता, फिर विरथा पछताय।।
माफ उसे गर कर दिया, देना बात भुलाय।
याद अगर तुम कर रहे, माफ नहीं कर पाय।।
गलती पर गलती करे, बार बार दुहराय।
माफ उसे करते रहो, वह नर सुधर न पाय।।
दृष्टि रखिये आज पर, कल ,खुद ही बन जाय।
भूले यदि तुम आज को, कल कैसे बन पाय।।
मंजिल वे ही पा सकें, जिनके मन विश्वास।
अगर भरोसा हो नहीं, कैसे फटकें पास।।
जब तक कुछ बोला नहीं, बना रहा अनमोल।
मुख से निकला बोल जब, लगा तभी कुछ मोल।।
जो कुछ अब हम कर रहे, मूल वही कहलाय।,
आगे चल कर फल मिले, सूद वही बन जाय।।
जो भी दुख की रात है, आखिर बीती जाय।
आशावादी गर बनो, सुबह खुशी को लाय।।

नरेन्द आहूजा 'विवेक'
602-जी. एच.53
सैक्टर-20, पंचकूला

शराबबंदीः जन-दबाव जरूरी

सर्वोच्च न्यायालय ने शराबबंदी की दिशा में एतिहासिक फैसला दिया है। उसने राष्ट्रीय और राज्यों के राजमार्गों पर खुली शराब की दुकानों को बंद करने के आदेश जारी कर दिए है। 31 मार्च 2017 के बाद उनके लायसेंस रद्द हो जाएंगे। इस समय शराब की ज्यादातर दुकानें राजमार्गों पर ही दनदनाती रहती है? हर एक-डेढ़ किमी पर शराब के अड्डे खुले हुए हैं। इन रास्तों से गुजरने वाले ज्यादातर ट्रकों, बसों और कारों के ड्राइवर शराब पीना अपना धर्म समझते हैं। भारत की सड़कों पर होनेवाली दुर्घनाओं में हर साल लगभग डेढ़ लाख मारे जाते हैं और पाँच लाख लोग घायल होते हैं। रोजाना 500 लोग सड़क दुर्घटनोओं में मारे जाते हैं। इस तरह के शराब के ठेकों की भरमार कर दी है। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले से कई राज्य नाराज भी दिखाई पड़ते हैं, क्योंकि उनकी आय घट जाएगी। लेकिन बिहार और गुजरात-जैसे राज्य भी भारत में हैं, जो पूर्ण शराबबंदी लागू करने पर डटे हुए हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिशकुमार ने बहुत ही अनुकरणीय काम किया है। उन्होंने राजमार्गों क्या, सभी स्थानों पर से शराब की दुकानों को बिदा कर दिया है। गुजरात सरकार ने अभी-अभी एक अध्यादेश जारी करके शराबबंदी के कानून का उल्लंघन करनेवालों की सजा 10 साल तक बढ़ा दी है।

यदि कुछ राज्य बिहार और गुजरात का अनुसरण न कर पाएं तो भी उनसे उम्मीद की जाती है कि वे सर्वोच्च न्यायालय के आदेश का पालन ईमानदारी से करवाएंगे। राजमार्गों के 500 मीटर की दूरी के अंदर कोई भी शराब की दुकान नहीं चलनी चाहिए। यदि चलें तो सरकारों को तो सख्त कार्रवाई करनी ही चाहिए, सामाजिक और राजनीतिक संगठनों को भी चाहिए कि वे सत्याग्रह, धरनों और प्रदर्शनों का आयोजन करें। महिला संगठन अगुवाई करें तो बेहतर होगा। जब तक जनता का जबर्दस्त दबाव नहीं होगा, राज्य सरकारें ठीक रास्ते पर नहीं चलेंगी। वे कोई भी चोर-दरवाजा निकालें, उसके पहले ही जनता के हमले का डर पैदा कर दिया जाना चाहिए।

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

सर्वमान्य नेता वीर सावरकर एक दृष्टि में

महाराष्ट्र के पिछड़े जिले रत्नागिरि की सीमा से बाहर जाने और किसी भी प्रकार के राजनैतिक गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इस क्रान्तिकारी का इस अवधि में अस्पृश्यता और सामाजिक परिवर्तनों का अथक प्रयास एक दृष्टि में।

- एन. एस. वापट ने अपनी पुस्तक "स्मृति पुष्प" में लिखा है कि सावरकर अस्पृश्यता का वर्णन करने वाली एक कविता की रचना करते हुए रो पड़े।
- अंडमान की जेल से एक पत्र में लिखा था-मैं भारत पर किसी विदेशी शासन के विरुद्ध विद्रोह कर रहा हूँ उतनी ही तीव्रता से जाति आधारित भेद भाव और अस्पृश्यता के विरुद्ध भी संघर्ष का पक्षधर हूँ।
- हिन्दू समाज से उन्होंने कहा था कि बिना यह सोचे कि अन्य लोग ऐसा करते हैं या नहीं इसी क्षण से संकल्प लो कि सबके सामने तुम अपने अस्पृश्य भाई का हाथ पकड़ोगे।
- जो अपना घर किराये पर देते हैं वह अस्पृश्य बन्धुओं को अपने घर दें, अपने कुओं से पानी भरने दें।
- ऐसा कोई दिन न जाये जो अस्पृश्यता निवारण का सार्वजनिक प्रयास न करे।
- यह वह समय था जब गांधी ने राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया था। डॉ. अम्बेडकर ने भी महासत्याग्रह इसके बाद ही शुरू किया।
- वे गणोशोत्सव के समारोह में केवल इस शर्त पर जाते थे कि उनमें अस्पृश्य बन्धुओं को भी प्रवेश मिलेगा।
- दशहरा और मकर संक्रान्ति के अवसर पर अपने सभी समाज के लोगों को लेकर उनके घरों में जाते थे।
- उनकी पत्नी यमुना बाई हल्दी कुमकुम के अवसर पर महिलाओं को बड़ी संख्या में एकत्र करती। सावरकर यह सुनिश्चित करते कि दलित वर्ग की महिलायें उच्च वर्ग की महिलाओं को कुमकुम लगायें।
- 1930 में विट्ठल मंदिर के संचालकों ने गणोशोत्सव के समय अस्पृश्य बन्धुओं को बैण्ड बजाने की अनुमति नहीं दी, सावरकर ने स्वयं पंजाब बैंक से कर्जा दिलाकर अपनी गारंटी पर अस्पृश्य समाज के बन्धुओं का ही एक बढ़िया बैण्ड तैयार कर दिया जो सावरकर बैण्ड के नाम से ही प्रसिद्ध हो गया।
- अपने घर के सामने ही 01 मई 1933 को एक जलपान गृह प्रारम्भ किया जिसमें अस्पृश्य बन्धुओं को ही रोजगार दिया, जो भी व्यक्ति उनसे मिलने आता उसे पहले जलपान गृह में कुछ न कुछ खाना या पीना अवश्य होता था।
- इण्डिया हाउस लंदन के सहवासी हर रात शुभरात्रि के रूप में सामूहिक रूप में घोषणा करते हैं।

एक देव, एक देश, एक भाषा
एक जाति, एक जीव, एक आशा

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
अमरोहा

www.thearyasamaj.org

आर्य अनाथालय फिरोजपुर में दयानन्द मॉडल स्कूल ने चलाया स्वच्छता अभियान

आर्य अनाथालय में स्थित दयानन्द माडल हाई स्कूल में एक दिवसीय स्वच्छता अभियान बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। स्कूल के अधिकारियों के साथ–साथ जिला फिरोजपुर के उपायुक्त कार्यालय की बाल सुरक्षा कमेटी एवम् चाइल्ड लाईन के योगदान से आयोजित किया गया। इस सफाई अभियान दिवस में बच्चों को पोस्टर, भाषण एवम् डेमोंस्ट्रेशन के द्वारा साफ–सफाई रखने के तौर तरीके समझाये गये।

परसनल हाइजिन, घर एवम् वातावरण की सफाई आदि पर खास तौर पर बताया गया। स्कूल प्रिसीपंल एवं सभी अध्यापिकाओं ने बच्चों को प्रेरित करने हेतु साफ सुथरी युनिफार्म पहनने पर उन्हें पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया। कक्षा की सफाई का काम भी बच्चों को सौपा गया ताकि वह सफाई के आर्य को समझें और कूड़ा कूड़ेदान में डालें। साथ ही घर–आँगन की सफाई का भी पूरा ध्यान दें और माता–पिता का सहयोग करें।

मैनेजर डॉ सतनाम कौर ने आए हुए मेहमानों को सम्बोधित कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम स्कूलों में लगातार होते रहने चाहिएँ ताकि स्वच्छता की अच्छी आदतें बच्चों में छोटी उम्र में ही बन पाएँ और वो दिन दूर नहीं जब हमारा भारत स्वच्छता का प्रतीक बनकर सारे विश्व में चमकेगा।

सोहन लाल डी. ए. वी. शिक्षा महाविद्यालय, अम्बाला शहर में राष्ट्रीय युवा दिवस आयोजित

सोहन लाल डी. ए. वी. महाविद्यालय, अम्बाला शहर में रैड रिबन क्लब की ओर से राष्ट्रीय युवा दिवस पर एड्स सम्बन्धी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में प्राचार्य डॉ. विवेक कोहली ने हरियाणा सरकार द्वारा चलाए गए एड्स अवेयरनेस कार्यक्रम की महता एंव प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। आयोजन के अंर्तगत विभिन्न की गतिविधियों के तहत प्रथम दिन डॉक्यूमेंटरी तथा पॉवर पवाइंट के माध्यम से एड्स जैसी भयंकर तथा लाईलाज बीमारी के कारणों तथा इसकी रोकथाम के उपायों सम्बन्धी जानकारी दी गई।

कार्यक्रम के दूसरे दिन नारा लेखन में तथा पोस्टर मेकिंग से एच.आई. वी सबंधी जागरूकता का संदेश दिया तीसरे दिन एक नाटक के माध्यम से एड्स जैसी बिमारी की रोकथाम के लिए समाज में जागरूकता पैदा करने का संदेश दिया। इसके साथ ही यह भी बताया गया कि एच. आई. वी. ग्रस्त लोगों से कैसे व्यवहार करना चाहिए। कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. नीलम लूथरा ने कार्यक्रम की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए बच्चों को यह संदेश अपने मित्रों एवं आस–पास के समाज के लोगों में फैलाने की प्रेरणा दी

इन क्रियोकलापों में प्रो नीरा तथा प्रो सोमवती ने भी मार्गदर्शन किया तथा एड्स के विषय पर जानकारी दी तथा समाज में लोगों को जागरूक करने के लिए प्रेरित किया।

डी.ए.वी. भड़ोली ने स्वामी श्रद्धानन्द को याद किया

डी.ए.वी. स्कूल भडोली (नादौन) हि.प्र. में श्रद्धानंद को श्रद्धाभाव, हर्षोल्लास एवं धूमधाम से याद किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ किया गया जिसमें विद्यालय के लगभग 800 छात्र–छात्राओं, सभी शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। विद्यालय के प्रधानाचार्य आर.एस.राणा ने स्वामी श्रद्धानंद के जीवन के बारे में बच्चों को विस्तार से बताया और कहा कि कोई व्यक्ति कितना ही पतित और पाप कर्म में लिप्त क्यों न हो उसके हृदय के अन्तस्तल में भी पुण्य विचारधारायें प्रवाहित होती रहती हैं। समय आने पर यही धाराएं मुख्य रूप धारण कर उस व्यक्ति के जीवन में अकल्पनीय क्रान्ति ला देती हैं।

कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण वैदिक भजन, श्लोकोच्चारण तथा आर्य समाज से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी का आयोजन था। उसका मुख्य उद्देश्य वैदिक संस्कृति से बच्चों को अवगत करवाकर उन्हें चरित्र निर्माण, कर समाज का श्रेष्ठ नागरिक बनाना है। इस प्रतियोगिता में कक्षा 5वीं से 8वीं तक के विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को प्रधानाचार्य ने विशेष पुरस्कारों तथा प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया तथा उन्हें महापुरुषों के पद चिन्हों पर चलने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम की समाप्ति डी.ए.वी. गान से की गई।

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 01/02-02-2017
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

डी.ए.वी. पिहोवा में हुआ वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पिहोवा ने वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के जज श्री राजन गुप्ता ने की। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्यातिथि जी के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। स्कूल के प्रधानाचार्य श्री एन.सी. बिंदल जी ने पूरे वर्ष की गतिविधियों से अभिभावकों को अवगत करवाया।

स्कूल के छात्र-छात्राओं ने इस अवसर पर एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। बच्चों ने लघु नाटकों के जरिए नशा, दहेज, भ्रूण हत्या व महिलाओं की समाज में दशा व उनकी शिक्षा के प्रति जागरूकता के बारे में प्रस्तुतियाँ दीं। हरियाणवी लोकनृत्य, भंगड़ा, गिद्दा व राजस्थानी नृत्यों सहित संगीत की अनेक प्रस्तुतियों ने सबका मन मोह लिया।

मुख्यातिथि राजन गुप्ता जी ने अपने भाषण में कहा कि व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किसी भी संस्था का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। इस अवसर पर मुख्यातिथि जी ने मेधावी छात्रों को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम के अंत में स्कूल के चेयरमैन श्री एस.डी. मुरार जी ने आए हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद किया।

इस कार्यक्रम में डी.ए.वी. कॉलेज पिहोवा के प्रिंसीपल श्री कामदेव झा, हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग के चेयरमैन श्री भारत भूषण भारती, जज रजनी कौशल जी, जिला कुरुक्षेत्र सैशन जज श्री अरुण कुमार त्यागी जी व अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे।

जगन्नाथ जैन डी.ए.वी गिदड़बाहा ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को दी श्रद्धांजलि

आर्य समाज गिदड़बाहा में स्वामी श्रद्धानंद का बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के महान् सेनानी व एकता के सूत्रधार स्वामी श्रद्धानंद जी की पुण्य स्मृति में हवन यज्ञ किया गया जिसमें जगन्नाथ जैन डी.ए.वी. सी सै. पब्लिक स्कूल गिदड़बाहा वी प्रधानाचार्या श्रीमती मोनिका खन्ना जी एवम् आर्य बन्धुओं तथा अध्यापक वृन्द ने भाग लिया।

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के प्राचार्य डॉ. प्रमोद ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि नारी शिक्षा, सामाजिक समानता व हिन्दु-मुस्लिम एकता के लिए स्वामी जी द्वारा किए गए कार्यों के लिए हम सदैव उनके ऋणी रहेंगे। भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए अपने प्राण न्याछावर करने वाले इस महामानव को स्मरण करते हुए विद्वान वक्ता ने कहा कि अगर हम वास्तव में उन्हें श्रद्धांजलि देना चाहते हैं हम उनके बलिदान से प्रेरणा लेकर सदैव उनके पदचिह्नों पर चलने का संकल्प लें। इस अवसर पर वैदिक प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की गईं। कार्यक्रम में विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। वैदिक प्रतियोगिता में जगन्नाथ जैन डी.ए.वी. सी. सै. पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने द्विवतीय स्थान प्राप्त किया।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल यमुनानगर में लोहड़ी की धूम

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल यमुनानगर में लोहड़ी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से किया गया जिसमें विद्यालय के सभी शैक्षणिक तथा गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों ने भाग लिया। यज्ञ के उपरान्त विद्यालय के खेल परिसर में अग्नि प्रज्ज्वलित की गई जिसमें मूँगफली रेवड़ी इत्यादि की आहुतियाँ दी गई।

विद्यालय परिवार के सभी सदस्य सभागार में एकत्रित हुए जहाँ विद्यालय के धर्मशिक्षक श्री नरेश कुमार ने लोहड़ी तथा मकर संक्रान्ति पर्व के महत्व को दर्शाते हुए कहा कि हमारा देश भारत वर्ष विभिन्न प्रकार के पर्वों के लिए जाना जाता है जो सभी धर्मों के लोगों को एकता के सूत्र में बाँधने का काम करते हैं। श्री नरेश जी ने कहा कि लोहड़ी मनाने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। ऋषि मुनि आश्रमों में रहते थे लोहड़ी पर्व से कुछ दिन पहले वे लकड़ियाँ इकट्ठी करना प्रारम्भ कर देते थे। लोहड़ी वाले दिन एक दूसरे को अपने आश्रम में आमंत्रित करते हुए अग्नि की पूजा किया करते थे। उन्होंने कहा कि अग्नि सूर्य की प्रतीक है इसलिए शरद् ऋतु में रवि की फसल को तैयार करने के लिए, सूर्य के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए मूँगफली, रेवड़ी तथा मक्की से बनने वाले फुल्ले अग्नि में समर्पित करते हैं। अगले दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश कर जाता है इसलिए आने वाली फसल के लिए सूर्य के उपयोगी रहने की कामना करते हुए सूर्य देव से प्रार्थना करते हैं। मकर संक्रान्ति वाले दिन लोग सरोवरों में स्नान करते हैं। यह भी सूर्य के महत्व को दर्शाता है कि मकर राशि में आने के बाद सूर्य की किरणों का सकारात्मक प्रभाव होने लगता है और सरोवर में डुबकी लगाने से उनके शरीर के कई रोग समाप्त हो जाते हैं। अन्त में सभी को लोहड़ी तथा मकर संक्रान्ति की शुभ कामनाएँ देते हुए शान्ति पाठ से आयोजन समाप्त हुआ।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू-30, ओखला, फेस-II, नई दिल्ली-110020 (दूरभाष : 26388830-32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.-9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**